।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/–
आजीवन : 1100/–
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
डाक पंजीकरण संख्या–
UP MRD Dn-64/2018-20
दयानन्दाब्द १९५
मानव सृष्टि सं.– १९६०८५३११९
सृष्टि सं.– १९७२९४९११९

वर्ष–17 अंक–21 माघ शु. 11 से फाल्गुन कृ. 10 सं. 2075 वि. 16–28 फरवरी 2019 अमरोहा, उ.प्र. प्रति–5/–

टंकारा चलो...

टंकारा में भव्य बोधोत्सव ३ मार्च से

टंकारा (राजकोट)। महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट प्रतिवर्ष ऋषि जन्मभूमि टंकारा में शिवरात्रि के अवसर पर ऋषि बोधोत्सव का भव्य आयोजन करता है। इस वर्ष 3 से 5 मार्च तक यहां भव्य बोधोत्सव का आयोजन किया जायेगा। इस अवसर पर 26 फरवरी से 4 मार्च तक आचार्य रामदेव के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन होगा। ट्रस्ट के मंत्री रामनाथ सहगल के अनुसार इस वर्ष डीएवी कॉलेज प्रबन्ध कत्री के प्रधान पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष होंगे तथा डीएवी ट्रस्ट के डॉ. रमेश आर्य एवं एस.के. शर्मा विशिष्ट अतिथि होंगे। कार्यक्रम में सत्यपाल पथिक व जगत वर्मा का भक्ति संगीत भी होगा।

टंकारा समाचार के संपादक अजय सहगल के अनुसार इस अवसर पर देशभर से बड़ी संख्या में आर्य विद्वान, संन्यासी वृन्द, नेतागण व प्रतिनिधि पधार रहे हैं।

आर्यावर्त केसरी के नेतृत्व में लगभग 400 आर्यजनों का विशेष जत्था भी कार्यक्रम में विशेष रूप से सहभागिता करेगा। ज्ञातव्य है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की पावन जन्मभूमि टंकारा में ट्रस्ट का विशाल भवन, ऋषि जन्मभूमि, भव्य एवं आकर्षक यज्ञशाला, महर्षि दयानन्द गौशाला, उपदेशक महाविद्यालय तथा विशाल अतिथि भवन आज टंकारा की शोभा बढ़ा रहे हैं। यहां प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में श्रद्धालु पधारते हैं और कृतज्ञतापूर्वक युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती को नमन करते हैं। टंकारा में किये गये भव्य निर्माण एवं वर्ष–वर्ष चलने वाली परियोजनाओं तथा कार्यक्रमों के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा जिसके महामंत्री रामनाथ सहगल व प्रधान डॉ. पूनम सूरी हैं तथा अजय सहगल टंकारा वाले सहित अन्य विशिष्ट महानुभाव प्रमुख सहयोगी हैं, को विशेष श्रेय जाता है। ट्रस्ट की ओर से विभिन्न प्रकल्प तथा ऋषि लंगर की व्यवस्था के लिए आर्थिक सहयोग देकर हम पुण्य के भागी बन सकते हैं। ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा–80जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

बरनावा में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ १० मार्च से

ये है ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी द्वारा बरनावा में स्थित एक भव्य यज्ञशाला

सुमन कुमार वैदिक
बरनावा (बागपत) उ.प्र.।

पूर्वजन्म के शृंगीऋषि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी द्वारा स्थापित महर्षि महानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, (लाक्षागृह) बरनावा में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 10 मार्च रविवार से 17 मार्च रविवार तक भव्य एवं विशाल चतुर्वेद पारायण महायज्ञ आयोजित हो रहा है।

ज्ञातव्य हो कि यह कार्यक्रम प्रतिवर्ष गांधीधाम समिति तथा महर्षि महानन्द गुरुकुल महाविद्यालय बरनावा द्वारा किया जाता है, जिसमें देश–विदेश से हजारों श्रद्धालु भाग लेकर धर्म लाभ तथा आत्मशान्ति पाते हैं। उल्लेखनीय है कि गुरुकुल में स्थापित पांच विशाल यज्ञवेदियों पर चारों वेदों का एक साथ यज्ञ होता है तथा प्रतिवर्ष शिवरात्रि के पश्चात् आने वाले रविवार से अगले रविवार तक गुरुकुल का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया जाता है।

समिति ने देशभर के श्रद्धालु यज्ञ प्रेमियों से इस महायज्ञ में पधारने की अपील की है। इस अवसर पर देश भर से अनेक संन्यासी विद्वान, तपस्वी साधक, राजनैतिक व सामाजिक कार्यकताओं सहित यज्ञ प्रेम पधारेंगे। (सम्बन्धित सामग्री

आर्यावर्त प्रकाशन द्वारा स्थापित सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि में सहयोग देकर

घर–घर पहुंचाएं सत्यार्थ प्रकाश

धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी हमें भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित किये जाएंगे। धन्यवाद

आर्यावर्त केसरी की प्रिन्टिंग यूनिट

आर्यावर्त प्रिन्टर्स

रूपये 300/- में 1000 कलर्ड विज़िटिंग कार्ड

नोट : आप हमें अपने कार्ड का डिज़ाइन ई–मेल भी कर सकते हैं।

हर प्रकार के मल्टी कलर्ड पोस्टर, पैम्फलेट, हैण्डबिल, किताब, ट्रैक्ट, कैलेण्डर, समाचार, पत्र व पत्रिका, स्टीकर्स, बिल बुक, स्कूल कॉलेज के कलर्ड प्रोस्पैक्टस, कॉलेज मैग्ज़ीन, स्कूल डायरी, रिपोर्ट बुक, फीस कार्ड, फीस रसीद, रिजल्ट कार्ड, कलर्ड लैटर हैड, लिफाफे, कलर्ड कार्ड आदि के मुद्रण व प्रकाशन के लिए सम्पर्क करें–

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, सौम्या सदन, गोकुल विहार, निकट श्रीराम पब्लिक इ. कालेज, अमरोहा–244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, e-mail : aryawartkesari@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

बिजनौर। चतुर्वेद पारायण यज्ञ ग्राम स्वाहेड़ी (बिजनौर) में 13 से 19 फरवरी तक अरविन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में होगा।

बागपत। चतुर्वेद पारायण यज्ञ ग्राम मुलसम, जिला बागपत में 22 से 28 फरवरी तक अरविन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में होगा।

हरियाणा। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, पंचगांव (दादरी) का 29वां वार्षिकोत्सव 24 व 25 फरवरी को गुरुकुल में होगा।

देहरादून। 12 से 20 मार्च तक वैदिक साधना आश्रम योग साधना एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी के ब्रह्मत्व में होगा।

मिर्जापुर। 17 से 19 मार्च तक आर्यसमाज, भदोही (मिर्जापुर) का वार्षिकोत्सव आयोजित होगा।

बागपत। 10 से 17 मार्च तक चतुर्वेद पारायण यज्ञ एवं वार्षिकोत्सव, महानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, बरनावा (बागपत) में ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त जी की कर्मभूमि में होगा।

नई दिल्ली। 1 से 3 फरवरी तक पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, नई दिल्ली में 251 कुण्डीय अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन सम्पन्न होगा।

प्रयाग। प्रयाग की पावन भूमि (गंगा तट) पर कुंभ मेला-2019 सैक्टर-11 में (14 जनवरी से 19 फरवरी) के पावन अवसर पर वैदिक धर्म प्रचार शिविर में वेदमंत्रों द्वारा यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है।

आगामी कार्यक्रम

फरवरी

- 13 से 19 फरवरी- चतुर्वेद पारायण यज्ञ, सुवाहेड़ी (बिजनौर)
- 13 से 20 फरवरी, वार्षिक चतुर्वेद पारायण यज्ञ। द्वारा- समस्त ग्रामवासी (ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी की प्रेरणा से)। यज्ञ ब्रह्मा अरविन्द शास्त्री।
- 21 से 24 फरवरी- प्रभुआश्रित की पुण्यस्मृति में यजुर्वेदपारायण महायज्ञ। वैदिक भक्ति साधना आश्रम, आर्यनगर, रोहतक में। यज्ञ ब्रह्मा- आचार्या सुकामा, भजनोपदेशक- कन्या गुरुकुल रुड़की (रोहतक) की कन्या। प्रवचन- आचार्य आर्य नरेश। संपर्क सूत्र- दर्शनकुमार अग्निहोत्री प्रधान- 9810933799, वेदप्रकाश आर्य मंत्री- 9416211809
- 24 फरवरी से 1 मार्च- वार्षिकोत्सव, आर्यसमाज मुण्डेरा बाजार, चौरी-चौरा, गोरखपुर।
- 26 फरवरी से 1 मार्च- केन्द्रीय आर्य समाज कर्णपार्क करनाल, महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव। आचार्य विष्णुमित्र पं0 योगेशदत्त।

मार्च

- 1 से 3 मार्च तक- सामवेद पारायण यज्ञ महर्षि दयानन्द उद्यान, जमानी, इटारसी, म0प्र0।
- 1 से 17 मार्च- आर्य समाज नगला, अटौर (गाजियाबाद)।
- 1 से 8 मार्च- चतुर्वेद पारायण यज्ञ, ग्राम मुलसम (बागपत) (ब्रह्मा- आचार्य अरविन्द शास्त्री)। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त की प्रेरणा से समस्त ग्रामवासी गत वर्षों की तरह आयोजित कर रहे हैं। रहने एवं भोजन की व्यवस्था ग्रामवासियों की ओर से होगी।
- 3 मार्च- दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव व बौद्ध दिवस, मोतीनगर सामुदायिक भवन में वेद प्रचार माडल मोतीनगर के तत्वावधान में।
- 8 से 10 मार्च- आर्यसमाज, रमेशनगर का वार्षिकोत्सव।
- 10 से 17 मार्च चतुर्वेद पारायण यज्ञ, ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी द्वारा स्थापित महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, बरनावा में गांधी धाम समिति द्वारा।
- 10 से 17 मार्च- चतुर्वेद पारायण महायज्ञ, गुरुकुल महाविद्यालय, बरनावा, जिला- बागपत।
- 10 मार्च- आर्य युवा परिषद, दिल्ली की पत्रिका राष्ट्रधर्म की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने पर यज्ञ।
- 11 से 17 मार्च- वार्षिकोत्सव आर्य समाज नगला अटौर, गाजियाबाद। यज्ञ ब्रह्मा- विष्णुमित्र, भजनोपदेशक, पं0 कुलदीप, अंजलि एवं मोहित शास्त्री।
- 11 से 12 मार्च- वार्षिकोत्सव, आर्य समाज, इग्लास, अलीगढ़।
- 12 से 20 मार्च- योग साधना यजुर्वेद पारायण यज्ञ, वैदिक साधना आश्रम देहरादून, यज्ञब्रह्मा-स्वामी चित्तेश्वरानन्द।
- 15 से 16 मार्च- वार्षिकोत्सव, आर्य समाज औरंगाबाद, मित्ररोल, जि0- पलवल।
- 17 से 19 मार्च- वार्षिकोत्सव, आर्यसमाज, भदोही (मिर्जापुर)।
- 23 से 24 मार्च- वार्षिकोत्सव आर्य समाज, इस्लामनगर, जि0- सहारनपुर।
- 24 मार्च- अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, आर्य समाज, घण्टाघर, भिवानी, हरियाणा।
- 26 से 28 मार्च- वार्षिकोत्सव आर्य समाज, बिन्दकी, सहारनपुर।
- 29 से 31 मार्च- वार्षिकोत्सव आर्ष गुरुकुल झरोली, सहारनपुर।

घर-घर तक पहुँचाएं कालजयी ग्रंथ
सत्यार्थ प्रकाश
मूल्य- ५०/-, १५०/-
प्रकाशक : आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)

राष्ट्रीय बालिका दिवस पर बेटियां हुईं सम्मानित

संजीव रूप
बिल्सी (बदायूँ)।

ग्राम गुधनी में स्थित आर्य समाज सत्संग भवन में नेताजी सुभाष चंद्र बोस जयंती मनाई गई। इस अवसर पर आर्य संस्कारशाला के बच्चों ने कविताओं के माध्यम से नेताजी को याद किया।

कुमारी नैनसी ने गाते हुए कहा- ."नेताजी चले आओ तुम्हें यह देश बुलाता है।/ यह धरा रो रही है गगन आवाज लगाता है।।''

कुमारी यीशु आर्य ने गाया- "इस हिंद का दुलारा प्यारा सुभाष बाबू।/झिलमिल चमक रहा है तारा सुभाष बाबू।।''

सत्यम आर्य ने गीत गुनगुनाया- "भारत मां का सच्चा बेटा भारत का हितकारी था...!''

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य संजीव रूप ने कहा- " नेताजी सुभाष चंद्र बोस हमारे देश को बलिदान के बल पर आजाद करा गए और यह समझा गए कि बिना कुर्बानी के आजादी नहीं मिलती। किंतु इस बलिदान का हम भारतवासी सम्मान नहीं कर रहे हैं। जातिवाद, मजहबवाद, छुआछूत और अनेक प्रकार की सामाजिक बुराइयां आज भी देश में फैली हुई हैं, जिनके कारण देश गुलामी की ओर बढ़ रहा है।''

सभा में विचित्रपाल सिंह, राकेश शाक्य, बद्री प्रसाद आर्य, साहब सिंह, राम बेटी, ज्योति रानी, विनीत कुमार सिंह, प्रज्ञा आर्य, ओम प्रकाश सिंह, बृजभान सिंह मौजूद रहे।

आयुर्वेद को जीवन का वेद माना गया है- वैदिक

सुरेशचन्द्र अग्रवाल
नोएडा।

मंत्र चिकित्सा, प्राणचिकित्सा, यज्ञ चिकित्सा, प्राकृतिक चिकित्सा सहित अनेक प्रकार की चिकित्सा हमारे यहां है, जिनका वर्णन आयुर्वेद में आता है, जिसे जीवन का वेद माना गया है। ये विचार सुमन कुमार वैदिक ने 9-10 फरवरी को सामुदायिक केन्द्र, सैक्टर-15 में आयोजित पंचकुण्डीय यज्ञ के पश्चात् व्यक्त किये।

श्री वैदिक ने कहा कि वात, पित्त, कफ के सन्तुलित होने पर जहां हम स्वस्थ रहते हैं, वहीं इनके कुपित होने से रोगी। वात को सन्तुलित रखने के लिए सत्तर प्रतिशत हरा भोजन करना होगा, अन्यथा 80 रोग शरीर में उत्पन्न को सकते हैं, जिनमें कब्ज, गैस, एसिडिटी, जोड़ों में दर्द, सरदर्द, रक्तचाप, हृदय रोग, पथरी, मोतियाबिन्द, लकवा, दमा आदि हो सकते हैं। शरीर में नब्बे प्रतिशत दर्द के रोग वात के कारण होते हैं। हरे पत्तों का रस इन रोगों से बचाव करता है। वात, तेल मालिश से भी नहीं होता। पित्त विकृत होने से चालीस रोग हो सकते हैं, जैसे सर्दी, जुकाम, दस्त, चर्मरोग, पीलिया, मधुमेह, कैंसर, आदि। अधिक मात्रा में अनाज, दालों आदि का सेवन, जो पेड़ सूखने के बाद प्राप्त होते हैं। कफ के विकृत होने से बीस प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। मोटापा, आलस, अस्थमा आदि रोग होते हैं। जो पृथ्वी के अन्दर उत्पन्न होने वाली वस्तुओं आलू, प्याज, अरबी आदि के अधिक खाने से उत्पन्न होते हैं। स्वस्थ रहना कठिन नहीं, किंतु रोगी होकर ठीक होना बहुत कठिन होता है। स्वास्थ्य षड्यंत्रों के इस युग में अपना चिकित्सक स्वयं कैसे बनें, इस विषय को भी उन्होंने स्पष्ट किया।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य नवीन शास्त्री सिरसा गंज (फिरोजाबाद) ने पांचों प्रकार के यज्ञों की व्याख्या करते हुए उसके महत्व को बताया और कहा कि वेद ईश्वरीय वाणी है। वेद का प्रचार करना हम सबका कर्तव्य है। यज्ञ योगाभ्यास से ताप, दुख नष्ट हो जाते हैं।

पं0 सतीश सत्यम ने भजनों के माध्यम से लोगों का मन मोह लिया। सुरेश अग्रवाल ने पर्यावरण, गोरक्षा एवं आर्य समाज की राष्ट्रीय आन्दोलन में भूमिका पर अपने विचार दिये। मुख्य संयोजक इन्द्रदेव गुप्ता ने सैक्टर-15 की आर्यसमाज की गतिविधियों का वर्णन किया तथा बताया कि विश्व आर्य महासम्मेलन में 41 हजार रुपये का दान दिया। मुख्य यजमान वीके गुप्ता सहित अस्सी यजमान रहे।

आरके ग्रोवर ने कहा कि यज्ञ प्रति शनिवार को सैक्टर में किया जाता है। एन0पी0 गुप्ता ने सभी को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम के पश्चात् सुन्दर सात्विक भोज की व्यवस्था की गयी थी।

गुरुकुल हरिपुर का नवम वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

दिलीप कुमार जिज्ञासु
हरिपुर जुनानी।

गुरुकुल हरिपुर जुनानी, जि0- नुआपाड़ा (उड़ीसा) का त्रिदिवसीय वार्षिक महोत्सव 20 से 28 जनवरी तक सम्पन्न हुआ।

इस महोत्सवीय अवसर पर लगभग सौ साधु-संतों का शॉल एवं नकद राशि से सम्मान, विधवा, दिव्यांग, अनाथों को साड़ी, शॉल एवं कम्बल वितरण, छ: आदर्श गृहस्थी वानप्रस्थ दीक्षा से दीक्षित एवं पचास के लगभग श्रद्धालु महानुभावों ने यज्ञोपवीत धारण किया। विद्वानों के द्वारा राष्ट्रोन्नति एवं आध्यात्म विषयक प्रवचन, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के द्वारा बौद्धिक एवं शारीरिक प्रतिभा प्रदर्शन हुआ, जिसमें 19 ब्रह्मचारी अष्टाध्यायी, धातुपाठ, लिंगानुशासन, उणादिकोष, पारिभाषिक, गणपाठ, निघण्टु, मीमांसा के अतिरिक्त पांच दर्शन, छन्द:शास्त्र, काव्यालंकार, वर्णोच्चार शिक्षा, आर्योद्देश्य रत्नमाला, ईशोपनिषद, पुरुष सूक्त जैसे ऋषिग्रन्थ आद्योपान्त सुनाये गये। नाटिका, गीतिका, नाट्य गीतिका, कव्वाली एवं विविध शिक्षाप्रद सांस्कृतिक कार्यक्रमों का ब्रह्मचारियों द्वारा प्रदर्शन किया गया।

गुरुकुल के संरक्षक खुशहालचन्द्र आर्य, कोलकाता की अध्यक्षता एवं सुरेन्द्र कुमार बुद्धिराजा व वेदप्रकाश मिगलानी के मुख्यातिथ्य में गुरुकुल सम्मेलन का यह आयोजन किया गया।

ब्रह्मयज्ञ तथा देवयज्ञ और आर्य पर्वों पर केन्द्रित
एक श्रेष्ठ पुस्तक
आर्य पर्व पद्धति
(केवल 20/- में उपलब्ध)
आर्यावर्त प्रकाशन,
अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)
सम्पर्क- 9412139333
आज ही मंगाएं
अर्चना यज्ञ पद्धति
(केवल 12/- में उपलब्ध)
साथ ही अनेक अन्य महत्वपूर्ण संग्रहणीय पुस्तकें सूची मंगाएं

आर्यसमाज अमरोहा में हुआ यज्ञ

अभय आर्य
अमरोहा।

आर्य समाज में प्रात: 8-30 बजे यज्ञशाला में पंडित चैतन्य गिरि के ब्रह्मत्व में यज्ञ का आयोजन किया गया। डॉ0 गजेन्द्र सिंह, मीना कुमारी, विनय प्रकाश आर्य, अंजू आर्या, नत्थूसिंह, करन सिंह, अभय आर्य यजमान रहे।

आर्य समाज के कर्मठ जुझारू सभासद डॉ0 गजेन्द्रपाल सिंह की अट्ठाइसवीं वैवाहिक वर्षगांठ के अवसर पर उनको आशीर्वाद देकर उनके सुखी जीवन की मंगलकामना की गयी। हेतराम सागर द्वारा सत्यार्थप्रकाश का पाठ किया गया। इसके एकादश समुल्लास में मूर्तिपूजा को वेदविरुद्ध बताया गया है। यशवंत सिंह ने संगठन-सूक्त पढ़कर सुनाये- सब मिलकर चलें, मिलकर सोचें, मिलकर विचार करें।

दिनेश चन्द्र रस्तोगी ने आर्य समाज के नियम पढ़कर सुनाये। मनोहरलाल आर्य ने ईशभक्तिगीत प्रस्तुत किया।

डॉ0 अशोक कुमार आर्य ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक तथा आर्य जगत के सुप्रसिद्ध संन्यासी, राजनेता स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला।

संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अंतरंग सदस्य राजनाथ गोयल ने किया। कार्यक्रम में सुभाष दुआ, नरेन्द्रकान्त गर्ग, विनय त्यागी, देशराज खुराना, मीना कुमारी, कु0 महिमा, स्वामी सत्यदेव पुरुषार्थी आदि भी उपस्थित रहे।

सांताक्रुज में हीरक जयंती महोत्सव पर आर्यवीर सम्मेलन संपन्न

मुम्बई। आर्यसमाज सांताक्रुज में 20 जनवरी को हीरक जयंती महोत्सव के अवसर पर आर्यवीर दल, मुम्बई द्वारा अर्यवीर सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसके आयोजक नरेन्द्र शास्त्री, महामंत्री आचार्य धर्मधर आर्य, कोषाध्यक्ष ज्ञानप्रकाश आर्य रहे।

अध्यक्ष के रूप में मुख्य अतिथि स्वामी देवव्रत आचार्य दिल्ली, एवं मुख्य वक्ता आचार्य संजय याज्ञिक मेरठ रहे। रमेश आर्य, जयाबेन पटेल, श्रीलता शास्त्री, सुनीता शास्त्री का विशेष सहयोग रहा।

स्त्री आर्यसमाज द्वारा वृद्धाश्रम में यज्ञ

अंजू आर्या
अमरोहा।

विश्व शान्ति कल्याण हेतु स्त्री आर्य समाज द्वारा वृद्धाश्रम में यज्ञ का अयोजन किया गया व वृद्धजनों को उपहार स्वरूप कुछ वस्तु व फल देकर सम्मान किया गया, और वृद्ध लोगों की सेवा का संकल्प लिया गया।

इस अवसर पर मुख्य यजमान विनीता व मिथलेश बनीं, यज्ञ उषा आर्या के द्वारा संपन्न कराया गया। मधु खुराना, अंजू आर्या, निर्मल विरमानी, सुप्रिया निशी, अंजू, अंशु सौम्या, अंजली, अचला टण्डन सभी पदाधिकारियों ने भविष्य में भी समय-समय पर यज्ञ व वृद्धजनों से मिलने का निर्णय लिया व सबका आभार व्यक्त किया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के ४०वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

सुमन कुमार वैदिक
नई दिल्ली।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान में त्रिदिवसीय अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन का पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, नई दिल्ली में भव्य समापन हो गया। सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रान्तों से लगभग 2500 आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। इस अवसर पर चले सत्रों में मुख्य रूप से राष्ट्रीय एकता शोभा यात्रा, 251 कुण्डीय पर्यावरण शुद्धि यज्ञ, राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन, व्यायाम शक्ति प्रदर्शन, राष्ट्रीय युवा सम्मेलन, वेद-संस्कृत रक्षा सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, संगीत संध्या, राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, शिक्षा-संस्कृति रक्षा सम्मेलन आदि कार्यक्रम मुख्य रहे।

८ से १० फरवरी तक होगा सम्मेलन

गाजियाबाद (सुमनकुमार वैदिक) जिला आर्य प्रतिनिधि सभा गजियाबाद का वैदिक सम्मेलन 8 से 10 फरवरी तक दयानन्द स्मारक जूनियर हाई स्कूल मुरादनगर (गाजियाबाद) में सम्पन्न होगा।

मनाया वार्षिकोत्सव

फरीदाबाद (हरियाणा)। आर्य समाज, नेहरू ग्राउण्ड का वार्षिकोत्सव 23 से 18 जनवरी 2019 तक मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, तथा भानुप्रताप भजनोपदेशक रहे। गायत्री अनुष्ठान के साथ ही यज्ञ, हवन, भजन, तथा मानस शास्त्री व राजकरनी अरोड़ा द्वारा प्रवचन हुए।

सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

आर्यावर्त केसरी- सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार योजना

सुमन कुमार वैदिक
8368508395, 9456274350

डॉ. अनिल रायपुरिया
9837442777

आर्यावर्त केसरी के सदस्यों से विनम्र अनुरोध

आर्यावर्त केसरी के सभी सम्मानित सदस्यों से अनुरोध है कि उनकी वार्षिक सदस्यता अवधि नाम व पते की स्लिप पर अंकित रहती है। अत: स्लिप पर अंकित अवधि के अनुसार यथासमय अपना वार्षिक सदस्यता सहयोग भेजते रहा करें। जिन मान्य सदस्यों ने अभी तक अपनी वार्षिक सदस्यता-राशि जमा नहीं की है, वे कृपया मनीआर्डर द्वारा आर्यावर्त केसरी के पते पर भेजकर रसीद प्राप्त कर लें, ताकि उन्हें आर्यावर्त केसरी निरंतर मिलता रहे।

प्रबन्धक (प्रसार)– आर्यावर्त केसरी

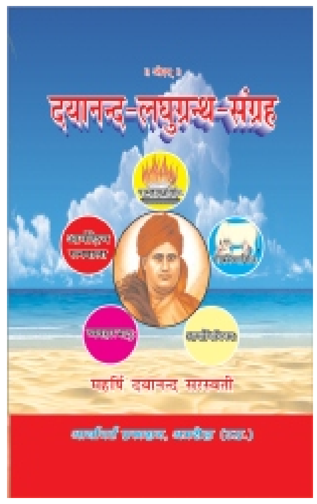

अवश्य पढ़ें - आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित संग्रहणीय पुस्तक

दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह

इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत इन पांच पुस्तकों का संग्रह है-

- पंचमहायज्ञविधि
- आर्योद्देश्यरत्नमाला
- गोकरुणानिधि
- व्यवहारभानु
- आर्याभिविनय:

पृष्ठ : 212, मूल्य : 60/- रुपये

पुस्तकें वी०पी०पी०, रजिस्टर्ड डाक, रेलवे तथा ट्रांस्पोर्ट से भेजी जा सकती हैं। अधिक मंगाने पर विशेष छूट उपलब्ध है।

पता- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) सम्पर्क सूत्र : 09412139333

आगामी कार्यक्रम

- 1 से 3 मार्च 2019 : सामवेद पारायण यज्ञ- खुर्रमपुर (मुरादनगर), गाजियाबाद, ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जन्मस्थली।
- 1 से 3 मार्च 2019 : सामवेद पारायण यज्ञ- मोतीनगर, नई दिल्ली, सामुदायिक भवन, वेदप्रचार मण्डल द्वारा।
- 1 से 3 मार्च 2019 : आर्य सम्मेलन एवं यज्ञशाला का उद्घाटन- आर्य समाज, जोधपुर।
- 1 से 3 मार्च 2019 : सामवेद पारायण यज्ञ- गुरुकुल जमानी, इटारसी, मध्यप्रदेश, परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा।
- 3 मार्च 2019 : वार्षिकोत्सव- रेवली गुरुकुल, सोनीपत।
- 3 से 7 मार्च 2019 : आर्य समाज, बिहारीपुर, बरेली, मुख्य वक्ता- डॉ0 सुरेन्द्र कुमार।
- 4 मार्च 2019 : महर्षि दयानन्द बोधोत्सव- आर्य समाज, आत्मानन्द धाम, बिजनौर। संपर्क- आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी।
- 1 से 5 मार्च 2019 : आर्य समाज मंगलवारी बाजार, सदर, नागपुर। संपर्क- 9423 3635655
- 9 से 10 मार्च 2019 : स्वर्ण जयन्ती समारोह- स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक, आर्य युवा परिषद् की पत्रिका राजधर्म के 50 वर्ष पूर्ण होने पर।
- 9 मार्च 2019 : यज्ञ एवं सम्मान समारोह- मालवीय नगर, नई दिल्ली, आर्य समाज, मालवीय नगर।
- 10 से 17 मार्च 2019 : चतुर्वेद पारायण यज्ञ- लाक्षागृह, बरनावा, गांधीधाम समिति, बरनावा।
- 10 मार्च 2019 : सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार वितरण एवं 51 कुण्डीय यज्ञ- सिद्धि विनायक फार्म, खैर रोड, अलीगढ़, पंकज आर्य।
- 11 से 17 मार्च 2019 : वार्षिकोत्सव- आर्य समाज, नगला अटोर, गाजियाबाद।
- 17 से 19 मार्च 2019 : वार्षिकोत्सव- आर्य समाज, भदोही, मिर्जापुर।
- 20 से 21 मार्च 2019 : वार्षिकोत्सव- आर्य समाज, उमरी, कानपुर।
- 22 से 24 मार्च 2019 : यजुर्वेद पारायण यज्ञ- ग्राम सलीमाबाद खुर्रमपुर, गाजियाबाद, ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी की जन्मस्थली।
- 23 से 24 मार्च 2019 : वार्षिकोत्सव- आर्य समाज, इस्लामनगर, सहारनपुर।
- 24 मार्च 2019 : अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी- आर्य समाज, घण्टाघर, भिवानी, हरियाणा।
- 26 से 28 मार्च 2019 : वार्षिकोत्सव- आर्य समाज, बिन्दकी, फतेहपुर। सूत्र- 7499698294
- 27 मार्च से 2 अप्रैल 2019 : योग साधना स्वाध्याय प्रशिक्षण- महर्षि दयानन्द स्मारक, कर्णवास, बुलन्दशहर।
- 28 से 31 मार्च 2019 : हीरक जयन्ती समारोह- आर्य समाज, मॉडल बस्ती, शादीपुरा, नई दिल्ली।
- 29 से 31 मार्च 2019 : वार्षिकोत्सव- गुरुकुल, झरौली, सहारनपुर।
- 1 से 3 अप्रैल 2019 : वार्षिकोत्सव- आर्य समाज, ओल्ड राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली।
- 2 से 9 अप्रैल 2019 : साधना शिविर- तपोवन, देहरादून।
- 3 से 5 अप्रैल 2019 : वार्षिकोत्सव- आर्य समाज, कैसरगंज, बहराइच, संपर्क सूत्र- 7499698294
- 5 से 9 अप्रैल 2019 : वार्षिकोत्सव- आर्य समाज, नर्कटिया गंज, बिहार।
- 15 से 21 अप्रैल 2019 : सामवेद पारायण यज्ञ- आनन्द धाम, ऊधमपुर, जम्मू कश्मीर। सम्पर्क सूत्र- 9419107788
- 19 से 21 अप्रैल 2019 : वैदिक संध्या प्रशिक्षण शिविर- दर्शन योग महाविद्यालय, सुन्दरपुर, रोहतक। सम्पर्क सूत्र- 7027026175

गाजियाबाद में हुआ जिला आर्य महासम्मेलन

ओमेन्द्र कुमार आर्य
गाजियाबाद।

8 से 10 फरवरी 2019 तक आर्यसमाज आयुध निर्माणी मुरादनगर एवं जिला सभा गाजियाबाद के संयुक्त तत्वावधान में जिला आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन अंजली आर्या, दिनेश पथिक अमृतसर, आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री आगरा के प्रवचन एवं भजन प्रत्येक सम्मेलन में होते रहे।

यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी चन्द्रदेव, साधक आश्रम, गाजियाबाद रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द शिक्षा संस्कृति एवं समाज सुधार सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में रहे। आर्य विद्यालय के छात्रों की वैदिक धर्म परीक्षाएं सम्पन्न हुई और श्रेष्ठ उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कार प्रदान किया गया।

समाजसेवी एवं समर्पित कार्यकर्ताओं जयपाल सिंह आर्य, चन्द्रशेखर आचार्य, प्रेम सिंह वर्मा, मायाप्रकाश त्यागी, श्रद्धानन्द शर्मा का अभिनन्दन किया गया। संयोजन में कृष्णदेव आर्य मंत्री, तेजपाल आर्य उपप्रधान, सुरेन्द्र सिंह आर्य उपप्रधान, सत्यवीर सिंह चौधरी, उमेन्द्र चन्द्र आर्य मंत्री, वीरेन्द्र सिंह सिरोही प्रधान, मा0 ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान उपस्थित रहे। शोदान सिंह आर्य, बबली कसाना, बालेश्वर त्यागी पूर्व शिक्षामंत्री उ0प्र0 विशिष्ट अतिथि रहे।

मनायी महर्षि की १९५वीं जयन्ती

हरिश्चन्द्र आर्य
अमरोहा।

तत्त्ववेत्ता, सत्यशोधक आर्य राष्ट्र के प्रबल पक्षधर, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का 195वां जन्मदिवस प्रचार कार्यालय में मनाया गया।

इस अवसर पर अधिष्ठाता हरिश्चन्द्र आर्य के निर्देशन में यज्ञ का आयोजन किया गया। अधिष्ठाता ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मनाम मूलशंकर था। कालान्तर में ज्योतितीर्थ स्वामी पूर्णानन्द महाराज से दीक्षा लेकर वे महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुए। वे मात्र हिन्दुओं के ही नहीं, बल्कि पूरे जग के हितैषी थे। वेदविद्या में निपुण, निष्काम योगी और मनीषी थे। श्री आर्य ने कहा कि उनके द्वारा स्थापित संस्था आर्य समाज का सिद्धांत है कि मनुष्य को केवल अपनी ही उन्नति में संतुष्ट नहीं होना चाहिए, अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

वैदिक कर्मकाण्ड, प्रवचन, आयुर्वेद सम्बन्धी परिचर्चाओं के लिए सम्पर्क करें

सुमन कुमार वैदिक
(वैदिक प्रवक्ता)
निवास- जे.-380, बीटा-।।, ग्रेटर नोएडा
मो. 8368508395, 9456274350

आवश्यकता है प्रतिनिधियों की

आपके प्रिय पत्र आर्यावर्त केसरी को देशभर में ऐसे प्रतिनिधियों की आवश्यकता है जो आर्य जगत, गुरुकुलों, आर्ष संस्थाओं व आर्य समाजों की गतिविधियों के समाचार व विचार प्रकाशनार्थ नियमित रूप से भेज सकें। साथ ही, जन-जन तक आर्यावर्त केसरी का प्रचार-प्रसार करने में सहायक सिद्ध हों।

-सम्पादक (9412139333)

आर्यवीर दल द्वारा सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता

भूदेव आर्य
अलीगढ़ (उ.प्र.)

आर्य वीर दल उ0प्र0 द्वारा आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान, तपोनिष्ठ गुरुकुल कालवा के संस्थापक आचार्य बलदेव की स्मृति में दूसरी बार अखिल भारतीय सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता का आयोजन 10 जनवरी को किया गया। यह परीक्षा देश भर के 108 जनपदों के 182 केन्द्रों पर सम्पन्न हुई।

इस प्रतियोगिता में सहभागियों को प्रोत्साहन हेतु मोटरसाइकिल जैसे बड़े पुरस्कारों सहित 1001 पुरस्कार दिया जाना निश्चित किया गया है। प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण 10 मार्च 2019 को अलीगढ़ में किया जाएगा।

इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी चेतनदेव संस्थापक/ संचालक गार्गी कन्या गुरुकुल, तथा मुख्याधिष्ठात्री डॉ0 पवित्रा वेदालंकार कन्या गुरुकुल, सासनी होंगे। पुरस्कार वितरण कार्यक्रम की अध्यक्षता राजेश गोयल, प्रज्ञा पब्लिकेशन प्रा0लि0 मथुरा तथा मुख्य अतिथि कृष्णवीर शर्मा, फरीदाबाद होंगे। मुख्य वक्ता आचार्य स्वदेश महाराज वेद मंदिर मथुरा होंगे। इनके साथ ही माया प्रकाश त्यागी, गाजियाबाद, धर्मपाल, प्रधान दिल्ली प्रादेशिक प्र0 सभा, ठा0 विक्रम सिंह, विनय आर्य दिल्ली प्र0 सभा, त्रिलोक चन्द्र आर्य, क्वालिटी हाइड्रोलिक्स प्रा0लि0 गाजियाबाद भी उपस्थित रहेंगे।

यदि आपको सुयोग्य वर-वधु की तलाश है तो
आर्यावर्त केसरी
के वैवाहिक कॉलम में विज्ञापन दें

वधु चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, जन्मतिथि- 12.01.1992, कद- 5 फुट 5 इंच, शिक्षा-B.Tech. (Com. Sc.) NIT, Raipur से, Multinational Company में अच्छी पोस्ट पर कार्यरत् प्रतिष्ठित परिवार के युवक हेतु आर्य परिवार की सुशिक्षित एवं संस्कारवान युवती चाहिए। सम्पर्क- 9412865775, 9412135060

वर चाहिए

वैदिक विचारों की 26 वर्षीय संस्कारित ब्राह्मण कन्या। प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल चोटीपुरा से। शिक्षा- बी0टैक0। हिन्दुस्तान एरोनैटिक्स, बंगलूरू में प्रबन्धक युवती हेतु आर्य समाजी परिवार का समकक्ष संस्कारित युवक चाहिए। सम्पर्क सूत्र : 8368508395, 9456274350

वधु चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, आयु- 40 वर्ष, कद- 5 फुट 8 इंच, शिक्षा- स्नातक, व्यवसायी युवक हेतु आर्य परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क- 09457274984

वधु चाहिए

आर्य परिवार संस्कारित, यमुनानगर (हरियाणा) निवासी, जन्म 19 जुलाई 1982, कद 6 फुट, शिक्षा बी0ए0, अपना मकान व दुकान, व्यापार में संलग्न युवक हेतु आर्य समाज परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क सूत्र : 07404136582, 08607200203

ब्रह्म तथा देवयज्ञ और आर्य पर्वों पर केन्द्रित
एक श्रेष्ठ पुस्तक
आर्य पर्व पद्धति
(केवल 15/- में)
आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)
सम्पर्क- 9412139333

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए, और चुनिए एक सुयोग्य जीवन-साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.) (चलभाष : 09412139333)

कर्णवास में साधना एवं स्वाध्याय शिविर 27 से

नरेन्द्र देव वानप्रस्थ
कर्णवास (बुलन्दशहर)।

आर्यों के तीर्थ कर्णवास पर स्थित कर्णवास गंगा के सुरम्य तट पर 27 मार्च से 02 अप्रैल 2019 तक एक साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। संयोजन समिति द्वारा आह्वान किया गया है कि भाग लेने के इच्छुक सज्जन 500/- रुपये शिविर शुल्क खाता संख्या- 11105707328 आई0एफ0एस0सी0 कोड एसबीआईएन 0002338 स्टेट बैंक डिबाई, बुलन्दशहर में जमा कराकर स्थान सुरक्षित कर लें। शिविर में प्रशिक्षण योग प्रचारक स्वामी केवलानन्द, वानप्रस्थ आश्रम, हरिद्वार व उनके सहयोगी महात्मा अमृतमुनि, हरिद्वार, योगाचार्य गिरिधारी लाल आर्य, अलीगढ़ द्वारा दिया जाएगा।

शिविर पुरुषों के लिए पूर्णकालिक है। शिविर काल में आश्रम से बाहर जाना अनुमन्य नहीं है। शिविरार्थी डायरी, पेंसिल, टार्च, दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं व हल्का बिस्तर साथ लायें।

मार्ग- रेल द्वारा अलीगढ़ से राजघाट पहुंचकर कर्णवास के लिए टैम्पो मिलत हैं, दूरी 3 कि0मी0। बस से डिबाई पहुंचकर कर्णवास के लिए टैम्पो मिलते हैं।

ओ३म् साधना मण्डल द्वारा यज्ञ, योग व वेदप्रचार

मनीषा पाण्डेय
त्रिपुरा, गुजरात, छ.ग., प.ब.

ओ3म् साधना मण्डल के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी दयानन्द विदेह के द्वारा 11 से 26 जनवरी तक निम्न स्थानों पर योग प्रचार किया गया।

नागेश मेहता के निवास पर दो दिन यज्ञ योग प्रचार हुए, जिनमें स्वामी जी ने बताया कि जीवन में यज्ञ से प्रेरणा मिलती है। ऊपर उठो, आगे बढ़ो और सुगंधीमय अर्थात् यशस्वी जीवन जिओ।

वानप्रस्थ साधक आश्रम में अग्ने, पाहि नो, रक्षसः - मार्गदर्शक प्रभु राक्षसों से हमारी रक्षा कर। इस सूक्ति पर स्वामी जी ने प्रवचन दिया।

आर्य समाज मयानी नगर के साप्ताहिक सत्संग में स्वामी ने कहा कि एकता में बल है। अत: सभी आर्यों को मिलकर देश की जनता को एकत्र करना है।

नासिक में डीआर पाण्डेय के निवास पर एवं यादव नागरे के गृह पर प्रात: सायं संध्या योग, यज्ञ, भजन, प्रवचन होते रहे।

अवधेश जी टेलर मास्टर के निवास (केतारी बगान) पर दो दिन यज्ञ प्रवचन किये हुए।

1 से 4 फरवरी तक ब्रजरानी मल्होत्रा, रक्षा चोपड़ा के निवास पर यज्ञ सत्संग संपन्न हुए।

डॉ० प्रियंवदा आर्यभिक्षु पुरस्कार से सम्मानित

आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) में पू0 महात्मा आर्यभिक्षु जी के दीक्षा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में आचार्या डॉ0 प्रियंवदा वेदभारती को माता लीलावती आर्यभिक्षु न्यास द्वारा ब्रह्मचारी अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर महात्मा नारायण स्वामी जी के जन्मोत्सव पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता में गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद से चार ब्रह्मचारियों ने भाग लिया। गुरुकुल कांगड़ी से 4 ब्रह्मचारियों एवं महाविद्यालय, ज्वालपुर से भी 4 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रथम व द्वितीय स्थान आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद ने प्राप्त किये।

दुष्ट के साथ उसी प्रकार से पेश आना चाहिए : डॉ० सुखदा सोलंकी

धमावाला (देहरादून)। आर्यसमाज धमावाला के रविवारीय सत्संग में 17 फरवरी को यज्ञ के पश्चात् मुख्य वक्ता डॉ0 सुखदा सोलंकी ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने आत्मानन्द सेवक से कहा कि वेदों के पढ़ने-सुनने व सुनाने से सबका कल्याण होता है। किसी भी प्राणी का मन, वचन व कर्म से बुरा न करना वैदिक संस्कृति है। किंतु दुष्ट के साथ हमें उसी प्रकार पेश आना चाहिए।

दयानन्द जन्मोत्सव २८ को पलवल में

पलवल। 195वां महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव आर्य समाज, जवाहरनगर (कैम्प) पलवल में 28 फरवरी को मनाया जाएगा। इसमें प्रमोद कुमार शास्त्री द्वारा 21 कुण्डीय यज्ञ कराया जाएगा। सम्पर्क सूत्र- 9416267482

आर्य महासंघ का महाधिवेशन २४ को

बड़ौत। आर्य महासंघ का पहला प्रान्तीय अधिवेशन 24 फरवरी को जनता वैदिक इंटर कालेज, बड़ौत में होगा, जिसमें आर्यों की जय कैसे हो? आर्यावर्त का निर्माण कैसे हो, इस पर विचार होगा।

वह कर्म करो, जिससे तुम्हारी संज्ञा ऊंची बने : अरविन्द शास्त्री

स्वाहेड़ी में ३७वां चतुर्वेद पारायण सम्पन्न

सुमन कुमार वैदिक
बिजनौर।

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त की प्रेरणा से ग्राम स्वोहड़ी में प्रतिवर्ष की भांति चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन हुआ। 37 वें वार्षिक पारायण यज्ञ में ब्रह्मा आचार्य अरविन्द शास्त्री ने कहा कि यज्ञ का अभिप्राय है कि जितना भी सुकर्म है। सर्वत्र का नाम यज्ञ माना गया है। प्रत्येक प्राणी को यज्ञ करना चाहिए। यज्ञ को जो ऊर्ध्वा शिरोमणि होता है, वह यज्ञमान होता है। सबसे प्रथम वह ब्रह्मा होता है, परन्तु उसके पश्चात् यज्ञमान ही है। उसे मूर्ध्वा कहते हैं। दूसरा उद्गाता है, जो उद्गीत गाता है। जब तक याग करने वाले यज्ञमान के हृदय, प्राण और मनस्तव संतुलित नहीं होते, तब तक याज्ञिक यज्ञ में सफलता को प्राप्त नहीं होता। जब यज्ञमान का मन कहीं और, क्रिया कहीं और हो रही है, तो याग सफल नहीं होता। जो यज्ञमान अपने द्रव्य का सदुपयोग करता है, वह मानवीयता में परिणत होता रहता है। संसार में ऊंचे उठो। वह कर्म करो, जिसके करने से तुम्हारी संज्ञा ऊंची बने। सृष्टि के आरम्भ में चारों वेद चार ऋषियों से एक साथ प्रकट हुए, तो चारों वेदों के यज्ञ एक साथ क्यों नहीं हो सकते?

आर्ष कन्या विद्यापीठ की विदुषी आचार्या डॉ0 प्रियंवदा वेदभारती ने कहा कि वेद भारतीय आचार-विचारों एवं ज्ञान का मूल स्रोत है। उसके बारे में जानने की इच्छा स्वाभाविक रहती है। सहशिक्षा से दुराचार पनपता है। शिक्षा के साथ ब्रह्मचर्य का पालन होना चाहिए। क्योंकि ब्रह्मचर्य के नष्ट होने से ईश्वर का ज्ञान नहीं हो सकता।

आर्यावर्त केसरी के सुमन कुमार वैदिक ने कहा कि मानव को स्वस्थ रहने के लिए आत्मा, मन, और प्राण का योग करना आवश्यक है। शरीर के जिस भाग में जब मन, प्राण शुद्ध रूप से कार्य नहीं करते, तो उससे मानव रोगी होने लगता है। शरीर के साथ स्वास्थ्य चाहने वाला मंत्र चिकित्सा, प्राण चिकित्सा, आयुर्वेद को अपनाएं। आयुर्वेद में जब से जीवन शक्ति विहीन सूखा वनस्पतियों का प्रचलन हुआ, वह असफल हो गया है। हरा खाओ हरे रहो। वात पित कफ के संतुलन से ही रोगमुक्त रहते हैं। पहला सुख निरोगी काया का सीधा अर्थ है स्वस्थ शरीर ही सुख है। स्वामी सत्यमेव ने वीररस पूर्ण कविताओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया।

सात दिवसीय यज्ञ में राकेश कुमार अभिजीत, गौरव कुमार, मंजीत सिंह एवं अमित कुमार सपत्नीक यज्ञमान रहे। यज्ञ में सुनील, रवीन्द्र सहित उनके वेदपाठी थे। ग्राम के किशोर बाल्यवेदी की साज सज्जा के लिए प्रात: पांच बजे उपस्थित होते थे। प्रधान विद्यासागर ने समस्त श्रद्धालुओं को धन्यवाद दिया। अन्तिम दिन हजारों श्रद्धालुओं ने ब्रह्मभोज किया।

परोपकारिणी सभा का स्थापना दिवस पहली बार

अजमेर (सुमनकुमार वैदिक) महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का स्थापना दिवस 27 फरवरी 2019 को ऋषि उद्यान, अजमेर में आयोजित होगा, जिसमें सज्जन सिंह कोठारी (लोकायुक्त राजस्थान), जगदीश प्रसाद शर्मा (प्रबन्ध संपादक दैनिक भास्कर), स्वामी सुबोधानन्द (सांसद) उपस्थित रहेंगे। संपर्क सूत्र- 145-2460164

महर्षि के जन्मोत्सव पर प्रभातफेरी

गुरुग्राम। 24 फरवरी 2019 को आर्य केन्द्रीय सभा, गुरुग्राम के संयुक्त तत्वावधान में महर्षि दयानन्द के 195वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में प्रभात फेरी 6-30 बजे से आर्य समाज भीमनगर से प्रारम्भ होगी। सम्पर्क सूत्र- 9811206230

विशाल ऋषि मेला ४ मार्च को

नई दिल्ली। ऋषि बोधोत्सव एवं शिवरात्रि पर रामलीला मैदान, नई दिल्ली में 4 मार्च को होगा। सम्पर्क सूत्र- आर्य केन्द्रीय सभा, 15- हनुमान रोड, फोन : 011-23360150

मनाया स्वतंत्रानन्द का १४२वां जन्मोत्सव

गुरदासपुर (पंजाब)। लौहपुरुष फील्ड मार्शल स्वामी स्वतंत्रानन्द महाराज का 142वां जन्मोत्सव दयानन्द मठ, दीनानगर में 21 जनवरी 2019 को हर्षोल्लास से मनाया गया। इससे पूर्व 14 से 21 जनवरी तक प्रात: 5 बजे निरंतर प्रभातफेरी निकाली गयी। तथा 6 बजे स्वामी जी के जीवन पर वृहद् यज्ञ चला, जिसकी पूर्णाहुति 21 जनवरी को 9 बजे हुई।

गुरुकुल हरिपुर ने किया अन्न एवं वस्त्र वितरण

हरिपुर जुनानी (सुमनकुमार वैदिक)। गुरुकुल हरिपुर जुनानी की तरफ से गरीबों, अनाथों, एवं असहाय लोगों को अन्न एवं वस्त्र वितरण किया गया। 16-17 फरवरी में नुआपाड़ा (उड़ीसा) में 500 परिवारों को 25-25 किलो चावल तथा एक-एक साड़ी प्रदान की गयी तथा भोजन की व्यवस्था की गयी। कार्यक्रम प्रतापमल बगड़िया ट्रस्ट के सहयोग से किया गया।

प्रवेश सूचना, सत्र- २०१९-२०

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल
शास्त्री नगर, लुधियाना (पंजाब)

आयु 9 से 11 वर्ष के मध्य, छठी कक्षा में कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य 100/-) भरकर 31 मार्च 2019 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किये जा सकते हैं)। कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 07 अप्रैल 2019 रविवार को प्रात: 8 बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा। संपर्क- 9814629410

आवश्यकता है

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित आर्ष साहित्य के वितरण व बिक्री हेतु ऐसे प्रतिनिधियों की आवश्यकता है, जो विभिन्न स्थलों पर स्टॉल लगा सकें तथा व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक स्थल पर साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु सम्पर्क कर सकें। इच्छुक महानुभाव शीघ्र सम्पर्क करें।

-प्रबन्धक, मोबा. : 9412139333

गऊ गंगा और ग्राम

गाय सबकी माता है

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत अर्थात् आर्यावर्त ने ही सारे संसार में ज्ञान का प्रकाश फैलाया है। भारत की अर्थव्यवस्था गऊ गंगा तथा ग्राम पर आधारित है इसीलिए जब तक ग्रामोन्नति नहीं होगी तब तक राष्ट्रोन्नति संभव नहीं। आर्थिक संवर्द्धन के लिए गऊ गंगा तथा ग्राम तीनों का संरक्षण आवश्यक है।

युग प्रर्वतक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गऊ संरक्षण के लिए सर्वप्रथम गौशाला की स्थापना हरियाणा के रेवाड़ी स्थित रामपुरा में की। उन्होंने गोसंरक्षण के लिए 'अथ गोकरुणानिधि:' का लेखन कर, सारे संसार के समक्ष गौ की महत्ता का न केवल वर्णन किया वरन् गऊ रक्षिणी सभा के गठन पर भी बल दिया। तदन्तर देशभर में अनेक गौशालाओं की स्थापना की गयी। निश्चय ही गऊ माता की महत्ता आज सर्वसिद्ध व निर्विवाद है। वास्तव में गऊ संरक्षण की दिशा में ऋषिवर दयानन्द एवं आर्यसमाज का प्रयास एक महान उपकार है। हमारे वैदिक साहित्य में 'गावो विश्वस्य मातर:' अर्थात् गाय सबकी माता है, का उद्घोष किया गया है जिससे गाय की महत्ता निर्विवाद रूप से उद्घोषित होती है। आज गोवध को लेकर विचित्र-विचित्र प्रकार की चर्चाएं चल रही हैं। कुछ बड़बोले लोग गोवध का वकालत कर रहे हैं जो अत्यन्त शर्मनाक है। निश्चय ही इसका राजनीतिकरण रूकना चाहिए।

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि गो का दुग्ध पौष्टिक होता है, यह अमृत तुल्य होता है। हमारे साहित्य में पंचगव्य की महत्ता का विषद् उल्लेख है। गोमूत्र का औषधियों में प्रयोग होता है। गोबर, दही, दूध, घृत आदि सब औषधियों के रूप में काम आते हैं, जिनका उपयोग राजयक्ष्मा, कैंसर, अल्सर, मानसिक, शारीरिक रोगों में किया जाता है। दुख की बात है कि आज गौएं बूचड़खानों में जा रही हैं, यह हमारा दुर्भाग्य है। बिना दूध की गाय भी हमारे लिए अत्यंत उपयोगी होती है। गायों को हमें हर स्थिति में बचाना चाहिए। गाय देश की समृद्धि है। गाय की रक्षा, सुरक्षा, संवर्द्धन व विकास करने की आवश्यकता है।

महर्षि ने यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र का उल्लेख करते हुए कहा है कि 'परमात्मा की आज्ञा है कि 'अघ्न्या: यजमानस्य पशून पाहि' हे पुरुष! तू इन पशुओं को कभी मत मार, और यजमान अर्थात् सबके सुख देने वाले जनों के सम्बन्धी पशुओं की रक्षा कर, जिनसे तेरी भी पूरी रक्षा होवे। और इसलिए ब्रह्मा से लेके आज पर्यन्त आर्य लोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते थे और अब भी समझते हैं। और इनकी रक्षा में अन्न भी मंहगा नहीं होता, क्योंकि दूध आदि से अधिक होने से दरिद्री को भी खान पान में मिलने पर कम ही कम खाया जाता है और अन्न के कम खाने से मल भी कम होता है, मल के कम होने से दुर्गन्ध भी कम होती है, दुर्गन्ध के स्वल्प होने से वायु और वृष्टि जल की शुद्धि भी विशेष होती है, उससे रोगों की न्यूनता होने से सबको सुख बढ़ता है।'

अत: हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम हिंसा नहीं करेंगे और गाय सबकी माता है के निहितार्थ को समझकर उसके संरक्षण, संवर्द्धन और पालन का संकल्प लेंगे। यह संकल्प निश्चय ही तभी सार्थक होगा जब हम गऊ दुग्ध का पान करेंगे, लावारिस, अपंग तथा अस्वस्थ्य गायों को कसाईखानों से बचाने के लिए उनका पालन करेंगे अथवा उन्हें गौशालाओं में भेजेंगे। गऊ बचेगी तो ग्राम बचेंगे। ग्राम बचेंगे तो राष्ट्र संरक्षित होगा, समृद्धशाली होगा। इसी प्रकार गंगा सहित सभी नदियों का संरक्षण आवश्यक है। गंदे नाले में तब्दील होती नदियां आखिर किस विकास की परिचायक हैं इसकी हमें चिंता करनी चाहिए। गऊ गंगा और ग्राम भारत की अस्मिता हैं। हमारी सभ्यता की कसौटी हैं। हमारी आत्म निर्भरता की आधार हैं। आओ इन तीनों के समुचित संरक्षण पर हम आज से ही संकल्पित हों।

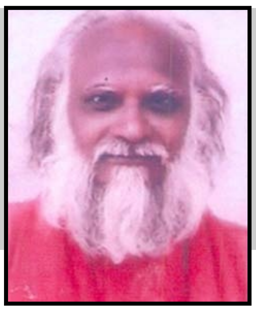

परिवार के अनुशासन से ही है सुख और शान्ति

स्वामी दयानन्द विदेह

गायत्री मंत्र का उच्चारण नेत्र बन्द करके शान्ति से धीरे-धीरे कीजिए। एक भजन है। एक बार ध्यान से सुनिए और बोलने का प्रयास कीजिए-

कभी सोचा भी है तूने, अरे नादान परदेशी।
यहां तू किसलिए आया, अरे नादान परदेशी।
ये डेरे तूने क्यों डाले, अरे क्यों छावनी छायी।
मुसाफिर है तू दो दिन का, अरे नादान परदेशी।
नहीं कुछ साथ लाया था, तू खाली हाथ आया था।
नहीं कुछ साथ जाएगा, अरे नादान परदेशी।
जो करना है, अभी कर ले, भला देखा है कल किसने।
भरोसा क्या है इस दम का, अरे नादान परदेशी।
किया जो सामने आया, करेगा सो भरेगा तू।
बदी से बाज आ अब तो, अरे नादान परदेशी।
किसी को क्यों सताता है, किसी को क्यों रुलाता है।
भलाई कर हँसा जग को, अरे नादान परदेशी।
तू भक्ति कर प्रभु की और, कर संसार की सेवा।
यही है सार दुनिया में, अरे नादान परदेशी।
ओम। ज्यायस्वन्त: चित्तिनो मा वि यौष्ट।
संराधयन्त: सधुराश्चरन्त:।
अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त: एत
सध्रीचीनान्व: संमनसस्कृणोमि (अ 3-30-5)

पूजा के योग्य माताओं, भद्रपुरुषों, नौजवान साथियों एवं बच्चों!

कल रात्रि प्रथम प्रवचन में मैंने आपके समक्ष 'व्यक्ति की साधना कैसी होनी चाहिए, जीवन को मीठा बनाना है', पर विचार दिया था। वेद में किसी भी विद्या की कमी नहीं है। कैसे बैठना, कैसे बोलना, कैसे सोना, कैसे जगत का व्यवहार करना, किस प्रकार के छात्र-अध्यापक, गुरु-शिष्य, पति-पत्नी, नेता-जनता, साधक और साधना हों; ये सभी बातें कही गयी हैं। ऋषि दयानन्द जी से पूर्व वेद का कोई प्रचार न था। सबकुछ लुप्त हो चुका था। बचपन में मैं सुना करता था कि वेद पढ़ने के लिए कम से कम सात जन्म लेना पड़ेगा। और वेद एक रेल के डिब्बे के बराबर होता है। इतना डराया हुआ था। लेकिन प्रात:स्मरणीय महर्षि दयानन्द जी की कृपा से यह सौभाग्य मिला। वेद का प्रचार किया। योगी अरविन्द ने कहा- वेद बन्द लिफाफा है, इसे वही खोल सकता है, जो योगी-तपस्वी है। ठीक-ठीक अर्थ वही कर सकता है।

मैंने संस्कार विधि गृहस्थ प्रसंग का मंत्र लिया है। आपने इस मंत्र पर संभवत: विचार सुना होगा। ऋषि दयानन्द बाल ब्रह्मचारी थे। उन्होंने वेद-व्रत धारण किया था। उन्होंने संसार को वेद के माध्यम से सही दिशा दी, मार्गदर्शन किया। ऋषि ने यज्ञ और ब्रह्मचर्य के बारे में सही चिन्तन दिया था। तीनों का रूप बिगड़ चुका था। गृहस्थ में रहते हुए आपका व्यवहार कैसा होना चाहिए? परिवार में अनुशासन कैसे रखना है? परिवार में किसी प्रकार सुख-शान्ति रह सकती है?

सब सीधे बैठिए! बच्चे, जवान सब टेढ़े-मेढ़े बैठे हुए हैं। ऐसे बैठो कि गोली भी सीने में लगे, तो भी न हिलो। दस, बीस, तीस वर्ष के बूढ़े और बुढ़िया हैं, आजकल बैठना तक नहीं आता।

ऋषि दयानन्द जी बाल ब्रह्मचारी थे। उन्हें गृहस्थवासियों की भी चिन्ता थी, क्योंकि गृहस्थ की मर्यादा ठीक न चली, तो सन्तति ठीक नहीं होगी। लोग तो कह जाते हैं कि संन्यासी को तो भक्ति, उपासना और ध्यान में मग्न रहना चाहिए। औरों की क्या चिन्ता करनी। पर संन्यासी तो नई पीढ़ी का पतन-ह्रास नहीं देख सकता, क्योंकि इसी से राष्ट्र का निर्माण होता है। संन्यासी को कर्मयोगी होना है।

मंत्र में पहला शब्द है- 'ज्यायस्वतन्त:'। इसका अर्थ हुआ- बड़ों का मान करने वाले होओ। संस्कृत में 'ज्येष्ठ' कहते हैं बड़ों को। जेठ-जिठानी शब्द आप प्रयोग भी करते हैं। जेठ की दुपहरी कितनी तीव्र होती है। तो, बड़ों का मान करने वाले बनो। बड़े-बुजुर्ग सब प्रसन्न हो रहे होंगे कि स्वामी जी हम सबके लिए बहुत अच्छी बात कर रहे हैं कि हमारा मान अवश्य होना चाहिए। जो जिस गुण में जहां भी जानकार, माहिर है, उसका मान होना चाहिए, क्योंकि उस गुण में वह बड़ा है। पिताजी दुकान में बैठते हैं, पर बेटा इंजीनियर हो गया। पिता से कह दिया जाए, कि वह पुत्र के कार्य को कर दें, तो वे सम्पन्न नहीं कर पाएंगे। वे वृद्ध हैं, बुजुर्ग हैं, उनका भी मान करो, क्योंकि उन्होंने दुनिया देखी है, संसार के थपेड़े खा चुके हैं। अत: आदर अवश्य करो।

युवक-युवतियों, बच्चों से मैं कहूंगा कि माता-पिता टोक-टाक करें तो बुरा न मानें। माता-पिता भी बच्चों को गुण-दोष अच्छी तरह तसल्ली से समझा दें। बड़े बुजुर्गों का भी कर्तव्य है कि छोटों का, बच्चों का आदर करें। संसार में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा, जो आदर न चाहे। पशु भी प्यार-सम्मान चाहता है। विद्वान ने कहा है- Who does not want get respect.

सम्भव है, कोई ऐसी बात हो, जो आपको पसन्द न हो, परन्तु उसे कर दें, तथा बाद में अपने बड़ों- अनुभवी पुरुषों से समझ लें, तो बेहतर है। इलाहाबाद में एक प्रेमी इसी बात पर बीमार पड़ गये कि उनके बच्चे उनका अनादर करते हैं। मैं भी उन्हें अस्पताल में देखने गया। तसल्ली दी, परन्तु बाद में पता लगा कि बम्बई में जाकर उनका परलोक गमन हो गया। इतनी ग्लानि हो गयी उन्हें। यज्ञ में, सेवा में, परोपकार में पिता का सहयोग चाहिए। अच्छा काम तो अच्छा ही है।

कभी-कभी यह भी शिकायत आती है कि हम दोनों (पति-पत्नी) के विचार नहीं मिलते। भाई! विचारों में कहीं भी पूर्ण रूप से मेल नहीं होता। अपना कर्तव्य, फर्ज निभाते चलिए। गृहस्थियों! घरों की हालत देखता हूँ, तो कवि-विद्वान की सूक्ति पर ध्यान चला जाता है- **''मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना:, तुंडे तुंडे सरस्वती।''**

बड़ी अशान्ति है। डबल एम0ए0, पीएच0डी0, परन्तु रोज लड़ते हैं- ''मैं इतना कमाता हूँ, मैं इतना कमाती हूँ।'' कितना अहंकार है अपनी कमाई का। जब पति-पत्नी में इतनी अशांति है, अलग विचारों का संगठन है, तो कितनी अशान्ति होगी। सभी को साधना करनी है- आदर, प्रेम, शान्ति की। एक संघ, संगठन में होते हुए भी, एक सिद्धांत को मानते हुए भी, सूक्ष्म दृष्टि से, गहराई से आप देखें, तो अनुभव होगा कि चिन्तन का भेद बना ही रहता है।

पति-पत्नी दोनों सत्संग में आए हुए थे। मुझसे पूछन लगे- ''हम दोनों में आगे-पीछे कौन चले?'' मैंने कहा- ''दोनों कदम से कदम मिलाकर चलो।'' वेद में उषा और किरणों के साथ-साथ उदय होने का संकेत है।

वैदिक समानता यही है- 'संगच्छध्वम्'। सम्यक ठीक साथ मिलकर चलो। पुरुष का भी आदर है, स्त्री का भी उतना आदर है। पति-पत्नी में यदि अज्ञानता, अपढ़ता के कारण त्रुटि है, तो बडों-अनुभवी पुरुषों का कर्तव्य है कि उन्हें मार्गदर्शन करें, समझाएं। उन्हें जागरूक बनाइए। महात्मा गांधी ने कस्तूरबा जी को धीरे-धीरे शिक्षित किया। साक्षरता (शिक्षा) के साथ सहिष्णुता, सहनशीलता का पाठ पढ़ाना होगा।

तो परस्पर हमें सम्मान का अभ्यास करना है। बटाला (पंजाब) में एक सभा है, जहां सत्संग होता है। विद्वान व संन्यासी के आने पर सभी उठकर हाथ जोड़कर खड़े हो जाते हैं। फिर विद्वान व संन्यासी के आसन पर बैठ जाने पर सभी अपना स्थान ग्रहण करते हैं। चेतन मूर्ति का स्वागत, पूजन करो। पत्थर की तरह बैठे रहना उचित नहीं।

विद्वान का, धनवान का, बलवान का, पहलवान का, गायक का, याने सबका सम्मान कीजिए।

दूसरी बात बहुत अच्छी आयी- चित्तिन: = समझदार बनकर, ज्ञानी बनकर गृहस्थ का व्यवहार करो, मूर्ख या पागल बनकर नहीं। समझदारी के साथ काम करो। ज्ञानपूर्वक कर्म ही धर्म है। समझदार व्यक्ति परिवार का मुखिया सोचता है, क्या क्रोध करने से परिवार का सुधार

शेष पृष्ठ- 8 पर.....

॥ सुस्वागतम् ॥

१० से १७ मार्च २०१९ तक बरनावा में आयोजित भव्य एवं विशाल चतुर्वेद पारायण महायज्ञ में जन-जन का अभिनन्दन

पूज्य ब्र. जी की अमृतवाणी कैसेट, सी.डी. व डी.वी.डी. में

1. मधु शान्ति पाठ	20. काला हिरन यज्ञ को ले गया
2. मंत्र-पाठ	21. यज्ञ में गऊ के बछड़े की बलि का अर्थ
3. अमृत क्या है?	22. यजमान का रथ द्योलोक में
4. अक्षय क्षीर-सागर में विष्णु भगवान्	23. माता मदालसा
5. इन्द्र देवता	24. राजा नल का दीपावली गान
6. ब्रह्म विद्या	25. कपिल मुनि एवं राजा सगर
7. ब्रह्मवेत्ता	26. लंका का विज्ञान
8. ब्रह्मसूत्र की व्याख्या	37. महर्षि विश्वामित्र को ब्रह्मवेत्ता की उपाधि
9. संसार एक यज्ञशाला	
10. आत्मा का भोजन याग	28. भगवान राम का तप
11. अश्वमेध याग	29. भगवान कृष्ण का जीवन, बटलोई वार्ता व जयद्रथ वध
12. वाजपेयी याग	
13. पंच-याग	30. महारानी द्रोपदी का जीवन, चीर हरन
14. त्रिकोण याग	
15. सविता याग	31. महाराजा युधिष्ठिर का राजसूय याग
16. स्वाहा की व्याख्या	32. निर्मोही नगरी
17. चौबीस होता से एक होता तक	33. चित्त की वृत्तियों का निरोध
18. सुविधा न होने पर याग	34. यम नचिकेता संवाद
19. याग की महत्ता	35. मृत्यु क्या है?

लाक्षागृह बरनावा स्थित गुरुकुल में प्रतिवर्ष होता है चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

अद्भुत वेदवक्ता थे पूर्वजन्म के शृंगी ऋषि पूज्य ब्र. कृष्णदत्त जी

मेरठ, बड़ौत रोड पर जनपद बागपत में आज भी विद्यमान है महाभारतकालीन ऐतिहासिक टीला, जहां कभी पाण्डवों को अज्ञातवास के दौरान भस्म करने के लिए कौरवों के द्वारा लाक्षागृह का निर्माण किया गया। यहां आज भी तत्कालीन गुफाएं मौजूद हैं, जो आगन्तुकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। इस ऐतिहासिक स्थली पर महर्षि महानन्द गुरुकुल महाविद्यालय के नाम से आज बहुत बड़ा गुरुकुल स्थापित है तथा पांच विशाल एवं भव्य यज्ञशालाएं भी हैं, जहां प्रतिवर्ष शिवरात्रि से अगले रविवार से रविवार तक आठ दिनों तक विशाल चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जाता है, जिसमें क्षेत्र भर सहित देश व विदेश से हजारों श्रद्धालु नर-नारी पधारकर यज्ञ में आहुतियां प्रदान करते हैं। गतवर्ष एक और विशाल यज्ञशाला का यहां निर्माण किया गया है, जिसमें हॉलैण्ड निवासी माता पण्डिता चन्द्रकली जी द्वारा भी विशेष सहयोग प्रदान किया गया। यहां एक विशाल गऊशला भी स्थापित है। इस पावन परिसर में प्रतिवर्ष अनेक कार्यक्रम सम्पन्न होते हैं, जिनमें रक्षाबन्धन (श्रावणी पर्व)पर सामवेद पारायण यज्ञ, ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ, दीपावली, होली तथा गुरुपूर्णिमा पर वेदपारायण यज्ञों के अनुष्ठान के साथ ही गुरुकुल का वार्षिकोत्सव तथा पांचों यज्ञ-वेदियों पर भव्य चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जाता है। निश्चय ही यह एक दर्शनीय स्थल है। एक बार इस पुण्यभूमि पर अवश्य पधारें।

महाभारतकालीन टीले में आज भी विद्यमान हैं ऐतिहासिक गुफाएं

पूर्व जन्म के श्रंगीऋषि

पूज्यपाद ब्र. कृष्णदत्त जी महाराज के द्वारा योग मुद्रा में दिये गये प्रवचनों से संग्रहीत वैदिक अमूल्य निधि पुस्तक एवं सीडी के रूप में उपलब्ध है

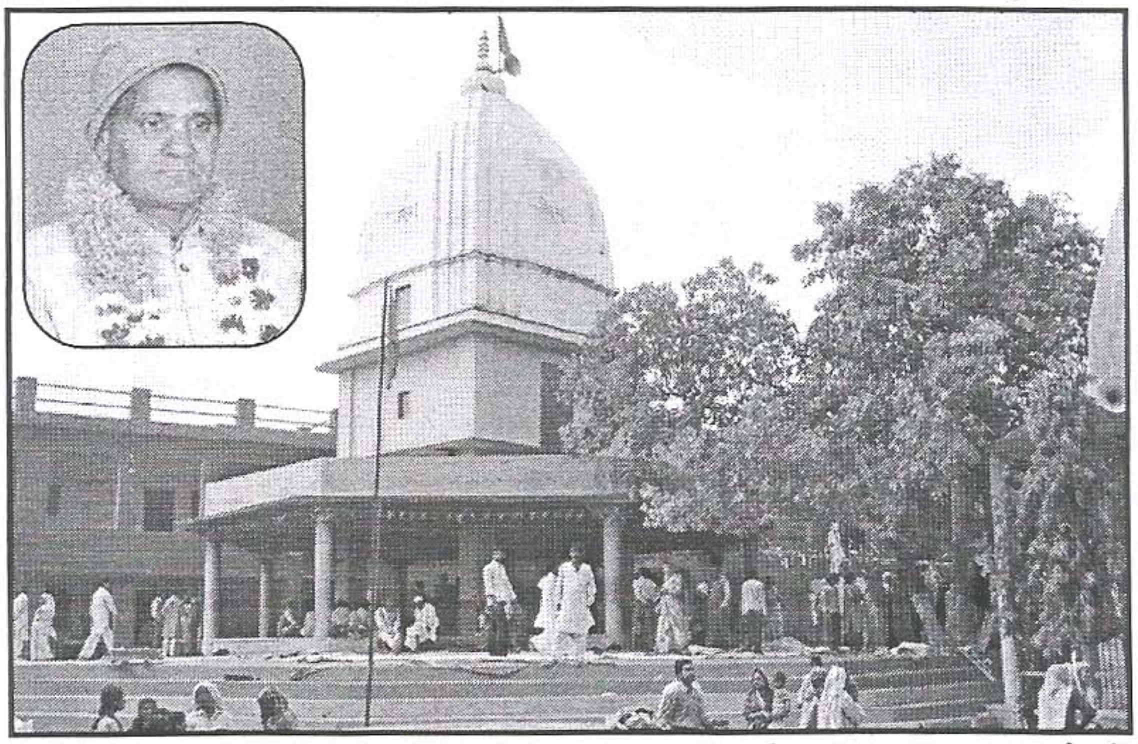

महर्षि महानन्द गुरुकुल महाविद्यालय (लाक्षाग्रह) बरनावा स्थित विशाल मुख्य यज्ञशाला -केसरी

यहाँ उपलब्ध है ब्र. कृष्णदत्त जी का साहित्य

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य- पुस्तकों, कैसेट्स, सीडी/डीवीडी के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है :-

१. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, (बागपत) उ.प्र. दूर. : ०१२३४-२४०३९५
२. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं० १६५/३०ए, दक्षिण भोपा रोड, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ०प्र०), ०१३१-२६०६४१४
३. कु० नीरू अबरोल, के-३ लाजपत नगर-३, नई दिल्ली, ४१७२१२९४, ०९८१०८८७२०७
४. श्री सुशील त्यागी, डी०-२९३ रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ०प्र०), ०१२०-२६४२०५२
५. श्री लोमश त्यागी, १०६/४ पंचशील कालोनी, गढ़ रोड, मेरठ (उ०प्र०), ०१२१-२७६२८१८
६. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-३८० सेक्टर वीटा-२, ग्रेटर नोएडा (उ०प्र०), दूरभाष : ९४५६२७४३५०
७. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम- बहेड़ी, रोहाना मिल, जिला- मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)
८. श्री विवेक त्यागी, १६ अशोक कालोनी, अलकापुरी, हापुड़ (उ०प्र०), दूर. : ०१२२-२३१६१९६
९. श्री संजीव त्यागी, ११०७, सैक्टर-३, बल्लभगढ़, जिला- फरीदाबाद (हरियाणा)
१०. श्रीमती बाला, २५१, दिल्ली गेट, नई दिल्ली, दूरभाष : २३२८२०८८
११. श्री पूनम त्यागी, ९६-ए, सेक्टर-१०, नोएडा (गौतमबुद्धनगर)
१२. मै० गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सड़क, दिल्ली, दूरभाष : २३९७७२१६
१३. मै० हर्ष मेडिकोज, ए-२/३१, सै.-११० मार्केट, फेस-२, नोएडा, उ.प्र. दूर. : ०१२०-६४१७१५९
१४. जवाहर बुक डिपो, बुढ़ाना गेट, आर्यसमाज, मेरठ (उ०प्र०)
१५. डॉ० अशोक आर्य, आर्यावर्त कालोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), चल. : ०९४१२१३९३३३

पूज्य ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी की अमृतवाणी पुस्तक रूप में

1. आत्मलोक	25/-	25. यागमयी साधना	25/-
2. आत्मा व योग साधना	25/-	26. यागमयी सृष्टि	25/-
3. अलङ्कार व्याख्या	30/-	27. दिव्य श्री रामकथा	100/-
4. यज्ञ प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40/-	28. महाभारत एक दिव्य दृष्टि	80/-
		29. याग चयन	25/-
5. धर्म का मर्म	40/-	30. ज्ञान-कर्म-उपासना	25/-
6. देवपूजा	20/-	31. अतीत का दिग्दर्शन (भाग-1,2,3) प्रत्येक भाग	100/-
7. रामायण के रहस्य	25/-		
8. महाभारत के रहस्य	20/-	32. दिव्य ज्ञान	30/-
9. महाराजा रघु का याग	20/-	33. महर्षि विश्वामित्र का धनुर्याग	25/-
10. मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	20/-		
11. वनस्पति से दीर्घ आयु	20/-	34. आत्म उत्थान	30/-
12. चित्त की वृत्तियों का निरोध	25/-	35. तप का महत्व	30/-
		36. अध्यात्मवाद	25/-
13. आत्मा , प्राण और योग	20/-	37. ब्रह्म विज्ञान	35/-
14. पंच महायज्ञ	20/-	38. वैदिक प्रभा	30/-
15. अश्वमेघ याग और चन्द्रसूक्त	30/-	39. प्रकाश की ओर	35/-
		40. कर्तव्य में राष्ट्र	35/-
16. योग मन्जूषा	25/-	41. वैदिक विज्ञान	35/-
17. आत्मदर्शन	25/-	42. धर्म से जीवन	30/-
18 पुत्रेष्टि-याग और मातृ दर्शन	25/-	43. Yogic Wisdom of Ancient Rishis	50/-
19. यौगिक प्रवचन माला (भाग-1,2,3,4,5)प्रत्येक	50/-	44. पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवं कर्मभूमि लाक्षागृह	10/-
20. यौगिक प्रवचन माला (भाग- 6,7) प्रत्येक	60/-	45. साधना	30/-
21. वेद पारायण यज्ञ का विधि विधान	25/-	46. यज्ञोमयी-विष्णु	40/-
		47. त्रेताकालीन विज्ञान	40/-
22. रावण इतिहास	35/-	48. स्वर्ग का मार्ग	40/-
23. याग और तपस्या	45/-	49. शंका-निवारण	25/-
24. यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	35/-	50. माता मदालसा	40/-

स्वार्थ रूपी बारूद के ढेर पर बैठी है दुनिया :

आवश्यकता है उत्तम चरित्र-निर्माण की

पं0 उम्मेद सिंह विशारद

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थों में उत्तम चरित्र के निर्माण को अत्यधिक स्थान दिया है। उन्होंने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारह समुल्लास केवल चरित्र, संस्कार व भ्रान्ति रहित जीवन बनाने के लिये लिखे हैं। उनका मानना था कि मनुष्य समाज की इकाई है। यदि मनुष्य का उत्तम चरित्र रहेगा, तो परिवार व समाज भी उत्तम रहेगा।

पन्चस्वन्तः पुरूष आ विशेष :। (यजु0)

मानव को उत्तम चरित्रवान् स्वभाव बनाने के लिये सर्वप्रथम पांच बातों का ध्यान रखना चाहिए। पुरुष पांच के भीतर स्थित है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में ही नहीं, परिवार में भी प्रविष्ट है, और एक राष्ट्र में प्रविष्ट है, विश्व में प्रविष्ट है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में एक इकाई है। वह किसी परिवार का अंग है, किसी समाज का सदस्य है, और राष्ट्र का भी सदस्य है। वह विश्व का भी सदस्य है। अपने परिवार व अन्य परिवार के सहयोग से उसका पारिवारिक जीवन है। वह समाज का, राष्ट्र का, विश्व का नागरिक है, और उसके रिश्ते-नाते में कई भूमिकायें हैं। वह अपने अन्दर पांच प्रकार के चरित्रों का निष्पादन कर सकता है, जबकि मानव जीवन की पांच शाखाएं हैं। बहुत कम लोग इन चरित्रों को समझते हैं, उन पर चलते हैं। धर्मात्मा, समाज सधारक, आदर्श पुरूष वही है, जो निम्न पांच चरित्रों को अपने जीवन में धारण करता है-

1. वैयक्तिक चरित्र, 2. पारिवारिक चरित्र, 3. सामाजिक चरित्र, 4. राष्ट्रीय चरित्र, 5. वैश्विक चरित्र।

उक्त पांच चरित्रों के संस्कार वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय से ही प्राप्त हो सकते हैं।

समाज और व्यक्ति का उत्कर्ष :

जिस समाज में परमार्थ वृत्ति नहीं होगी, उसका अस्तित्व कायम रहना असम्भव होगा। परिवार व समाज के व्यावहारिक समबन्धों में परस्पर प्रेम और सहानुभूति, आत्मीयता की भावनाएं नष्ट हो जाएं, तो समाज के अविकसित, असमर्थ, वृद्ध, अपंग, अपाहिज, दुखी लोगों का जीवन दूभर हो जायेगा। लोगों के जीवन में, विशेषकर समाज में एक-दूसरे के प्रति अविश्वास, सन्देह, भय, शंका की वृद्धि होगी। इससे समस्त समाज में विकृतियां, दोष पैदा हो जायेंगे। समाज में सहानुभूति सौजन्य, सेवा, सहायता, सहयोग, संगठन आदि पर समाज का विकास निर्भर करता है। ये सब परमार्थ, अर्थात् दूसरों के लिए जीवनदान से ही सम्भव हैं। स्वार्थ और संकीर्णता से समाज में विघटन, संघर्ष आदि का ही पोषण होता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना :

परमात्मा ने जीवन और मृत्यु के बीच आवश्यक साधन सबको समान रूप में वितरित करके यह सिद्ध किया है कि उसने समाज में जाति-पांति, भाषा, विचार, वर्ण में कोई भिन्नता नहीं की है। सारा विश्व एक प्रेम के सूत्र मे बंध सकता है, यदि सभी लोग संसार को एक कुटुम्ब की भावना से देखें और प्रत्येक मनुष्य से वैसा ही प्रेम करें, जैसे अपने परिवार के सदस्यों के साथ करते हैं। ईश्वर का आदेश भी ऐसा ही है कि मुझ जैसे पूर्ण और परिपक्व बनो।

सन्मार्ग का सत्य पथ कभी न छोड़ें :

मानव का जीवन कंटीली झाड़ियों की तरह है। इसे पार करना काफी दूरदर्शिता, विवेक तथा बुद्धीमानी द्वारा ही सम्भव है। सदाचार सतधर्म, विवेक, दूरदर्शिता की सीधी सड़क इसे पार करने के लिए बनी है। उस पर चलते हुए लक्ष्य पर पहुंचना समयसाध्य तो है, पर जोखिम उसमें नहीं है। अनीति पर चल कर जल्दी काम बना लेने व अधिक कमा लेने का लालच एक छोटी सीमा तक ही सिद्ध होता है। आगे चलकर इसमें भारी विपत्तियां ही विपत्तियां आती हैं। सबसे बड़ा दण्ड आत्मप्रतारण का है। अनीति के मार्ग पर चलने वाले को उसकी अन्तरात्मा निरन्तर धिक्कारती रहती है। मानव- जीवन सत्कर्मो द्वारा स्वयं शान्ति पाने और दूसरों को सुख देने के लिए मिला है।

विवेक की कसौटी पर प्रतिपादनों को कसें :

कुछ मदभेद लोक कल्याण और व्यक्तिगत स्वार्थ के साथ जुड़े होते हैं। उनमें से जनमत किसे स्वीकार करे, इसके लिए जनमानस की विवेकशीलता जगानी पड़ती है और दोनों पक्षों की प्रतिक्रिया परिणाति का स्वरूप प्रस्तुत करना पडता है। लोक मानस का एक बड़ा वर्ग ऐसा है, जो सामने प्रस्तुत विचारधाराओं में से जो अति उपयोगी, श्रेयस्कार दिखाई पडती है, उसे धीरे-धीरे तीव्र गति से अपनाने लगता है। अतः जीवन के सभी प्रतिपादनों को ईश्वरीय धर्म 'वैदिक ज्ञान' की कसौटी पर सत्याचरण द्वारा अपनाना ही कसौटी है।

काल्पनिक मदभेदों की हठवादिता :

संसार के अनेकानेक क्षेत्रों में अनेकानेक मान्यताएं प्रचलित हैं। 'कोई भी विवेकशील व्यक्ति एक को सत्य और दूसरे को मिथ्या नहीं कह सकता हैं'- कभी यह परिस्थितियों के अनुसार अधिक सत्य माना जाता होगा, पर अब और नये प्रतिपादन सामने आ जाने पर उस समय के तथाकथित सत्य पर उंगली उठने लगी है। विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर यही हो रहा है, जो सत्य के आधार पर होता है। नयी खोज करने पर पिछले प्रतिपादनों का खण्डन होता रहता है। धार्मिक क्षेत्र मे छाये हुए अन्धविश्वास, प्रपंच, बहकावे अपने ढंग के अनोखे हैं। गुरूडम इसी आधार पर पनपा है। एक पंथ वाले, अपने शिष्यों को दूसरे पंथ वालों के यहां जाने से इसलिए रोकते हैं कि कहीं उनकी विवेक बुद्धि जाग न जाए। इसी आधार पर दुराग्रहों की अपनी-अपनी परिधि जमी हुई है। विचारशील व्यक्तियों का कर्त्तव्य है कि इन अन्ध परम्पराओं से जनता को सन्मार्ग दिखाएं। यह तभी सम्भव है, जब सभी प्रबुद्ध जन सृष्टि- क्रमानुसार वेद की मान्यताओं व सत्य ईश्वरीय धर्म के मार्ग पर चलने की समाज को प्रेरणा देवें।

हम सब सत्य के शोध के विद्यार्थी हैं :

ईश्वर द्वारा प्रकृति का क्रम स्थिर जैसा प्रतीत होता है। मोटी दृष्टि से सम्पूर्ण सृष्टि अपने स्थान पर यथावत् स्थिर मालूम पडती है, पर बारीकी से देखने पर उसमें गतिशीलता परिपूर्ण वेग के साथ काम करती दिखाई देती है। अणु-परमाणु अपने केन्द्र के ईर्द-गिर्द उसी क्रम से घूमते दिखाई देते हैं। और उनकी गतिशीलता ही खगोल के वर्तमान स्वरूप को बनाए हुए है। स्थिर होने पर तो वे अपना अस्तित्व ही गवां बैठते। इस ईश्वरीय क्रिया को ऋत सत्य कहते हैं। सृष्टि में जो आंखों से दृष्टिगोचर हो रहा है, वह दिखने में तो सत्य है, पर नाशवान है। किन्तु उसका बीज रूपी तत्व ऋत सत्य है। हम सभी इसी ऋत सत्य के विद्यार्थी हैं।

सहयोग और समन्वय का मार्ग अपनाएं :

संघर्ष और सहयोग, ये दो ही मार्ग ऐसे हैं, जिनमें से किसी एक को चुनकर समस्याओं का समाधान सोचा जाता है। संघर्ष से तात्पर्य है अपनी मर्जी को दूसरों पर थोपना। बलवान लोग, निर्बलों को दबाकर उन पर अपनी मर्जी पर चलाते हैं। समर्थ, अपनी नीति असमर्थों के प्रति अपनाते हैं। सहयोग में अधिकांशतः लालच देकर वांछित कार्य किया जाता है। अतः सहयोग यदि निस्वार्थ रूप से किया जाये, तो वह समन्वय का मार्ग बनता है।

आर्थिक समानता की आवश्यकता :

अमीरी और गरीबी की विभाजन-रेखा भी कष्टकारक है। संसार में उतनी ही मात्रा में प्रकृति पदार्थ उत्पन्न करती है, जिससे सब मनुष्यों का गुजारा हो जाए। परन्तु लोभ व अधिक जमा करने का लालच उनमें खाई पैदा करता है। इसलिए मिल-बांट कर खाने की व संग्रह करने की समानतावादी नीति ही सबको अपनानी चाहिए।

बारूद के ढेर पर बैठी है यह दुनिया :

इस लेख व इस हैडिंग का मेरा आशय यह है कि समाज में अणुबम व परमाणु बम से भी खतरनाक वैचारिक, धार्मिक, आर्थिक मतभेद क्यों पनपते हैं। जब मानव निजि स्वार्थ में अमीरी-गरीबी की दीवार, ऊंच-नीच, छोटी-बड़ी जाति की दीवार, ईश्वर-प्रदत भूमि पर अत्यधिक कब्जा करने की दीवार, भ्रष्टाचार व अत्याचार से धनसंग्रह की दीवार, क्षेत्रवाद, प्रान्तवाद, राष्ट्रवाद की दीवार, अन्याय करने की दीवार, किसी के पास महल और किसी के सिर पर छत न होने की दीवार, ये सब समाज को तोड़ रही हैं, और संसार गृहयुद्ध की डगर पर अग्रसर है। उक्त समस्याओं के निवारण का मार्ग केवल महर्षि दयानन्द जी ने बताया था, और उक्त समस्याओं के निदान के लिए 'आर्य समाज' नामक वैचारिक व क्रान्तिकारी संगठन खोला था। परन्तु वर्तमान में आर्य समाज भी नगाड़ों की गूंज में खोता जा रहा है, तथा अपने मूल सिद्धान्तों से पीछे हटता जा रहा है। आज उक्त वैचारिक बारूदों से बचने का एकमात्र उपाय आर्य समाज संगठन है।

-गढ़ निवास, मोहकमपुर
देहरादून, उत्तराखण्ड।
मो0-9411512019
9557641800

परिवार के अनुशासन से ही है.....

पृष्ठ-६ का शेष

होगा? नहीं। कोई भी दिलेरी से नहीं कह सकता कि क्रोध से सुधार होगा। हाँ, मन्यु का प्रयोग कभी-कभी परिवार, समाज के लिए वरदान होता है। मर्यादा टूटती है, अनुशासन ढीला हो जाए, तो जोर से चेतावनी के रूप में वाणी का प्रयोग मन्यु है। वक्ता बोल रहा है, लोग गप्पें लगा रहे हैं, तो कहना पड़ता है- बातें न करो, ध्यान से सुनो। बच्चे निरर्थक आवाजें कर रहे हैं, तो माता-पिता उन्हें जोर से डपटते हैं, यह सब 'मन्यु' है। जरा सीधे बैठिए। योगी बनो, योगिनी बनो। ठीक से बैठो। देश पुराना, और हमें आता कुछ नहीं, क्योंकि सीखने का प्रयत्न किया नहीं। बच्चों को गुरुकुल में भेजो, परन्तु आचार-विचार से घर में खूब पका लो। कई लोग ऐसा सोचते हैं- बच्चा बिगड़ गया है, भेज दो गुरुकुल में। ऐसा बिगड़ा हुआ वहां भी परेशान करेगा। अपनी कमजोरी वहां फेंक देना चाहते हो। कहा 'चित्तिः' - ज्ञानपूर्वक कार्य करो। संध्या मंत्रों का उच्चारण करना सीखो। तोतारटन्त उच्चारण नहीं। तोते की तरह रटना बच्चों का काम है। बड़े तो मनन-चिन्तन करें। टी0 वी0 देखिए, पर हरेक चीज देखने की नहीं। विकार, भोग बढ़ाने वाले प्रसंग को न देखें। अमेरिका में भी इस पर खोज-चिन्तन आरम्भ हो गया है कि बहुत अधिक टी0वी0 देखने से मानसिक रोग हो सकता है। आयुर्वेद शास्त्र में यहां पहले ही खोज करके बता दिया गया है। अंग्रेजी माध्यम वाले आयुर्वेद पढ़ें, तो उनकी आंखें खुलेंगी। सिनेमा देखते हो, ज्ञानपूर्वक देखो। उसके परिणाम पर भी विचार करो। नीर-क्षीर विवेक की स्थिति है, तो देखो। रेडियो, टी0वी0 साधन है प्रचार का। इसके अच्छे-बुरे दोनों प्रयोग हैं। इसे अच्छा बना लीजिए। ऋषि दयानन्द अत्यंत विनम्र सावधान ज्ञानी पुरुष थे। उन्होंने कभी नहीं कहा कि मेरा विचार अन्तिम सत्य है। उन्होंने नियम बनाया- 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' गृहस्थियो! ज्ञानपूर्वक व्यवहार करो। चुगली, निन्दा, शिकायत, ईर्ष्या-द्वेष आदि करना समझदारी नहीं है।

तीसरी चीज; मंत्र में कहा 'मा वियौष्ट' कोने में अलग होकर न बैठो। रुष्ट न होओ; सास को बहू पर गुस्सा आया, चाबी फेंककर कहने लगी मैं हरिद्वार जा रही हूँ। भाई! रुष्ट होकर तीर्थ में जाओगे, तो शान्ति नहीं मिलेगी। छोटे-छोटे मतभेदों पर नाराज नहीं होना है। वेद, ईश्वर, संस्कृति से कभी नाराज न होना। अच्छे पुरुषों से रुष्ट मत होना। यदि हो जाओ, तो क्षमा मांग लेना। आगे कहा- 'सधुराः चरन्तः' संगठित होकर करना ही सुन्दर है। पार्टी की दृष्टि से कार्य न करो। अच्छे संगठन से जुड़ो। लड़ने की इच्छा हो जाए, तो एक थ्यहीजपदह त्ववउ बना लो, पर बाहर न लड़ो। (हँसी)। हम राष्ट्र के लिए एक हैं, ऐसी साधना करते रहिए। आगे कहा है- 'सम् राधयन्तः'। परिवार में, राष्ट्र में सबका सम्यक् निर्माण करना चाहिए। अपने-अपने काम करना ही ठीक निर्माण है। 'अन्यः अनस्मै वल्गु वदन्त' ठीक-ठीक वाणी का प्रयोग करें। परस्पर सत्य-मधुर-नीतिकारक भाषण करते हुए 'सध्रीचीन्' सहयोगपूर्वक (एत) गति करो। मन को जोड़कर वृद्धि-विकास की ओर बढ़ते जाइए। इसी में शान्ति है, सुख है। मिथ्याभिमान में अशान्ति क्लेश है, यही वेद का संदेश है। मन्त्र का अर्थ उच्चारण करिए-सब लोग अपने-अपने स्थान में कर्तव्य करते हुए एक-दूसरे का आदर करें, ज्ञानी-समझदार बनकर, परस्पर रुष्ट न होते हुए, संगठित कार्यक्रम पर चलते हुए, सबका विकास करें, एक-दूसरे के साथ सत्य, मधुर, प्रिय, समाधानपरक वाणी का प्रयोग करते हुए मन से मन जोड़कर, मिलाकर सबको सहयोग करें।

(वेद प्रवचन से साभार)

नव संवत्सर पर विशेष

खुला चैलेंज- प्रचलित हिन्दू पंचांग अशुद्ध है

सुमन कुमार वैदिक

ऋतु	सायन पंचांग के माह	प्रारम्भ की कलैण्डर तिथि	निरयन पंचांग के माह
वसंत	मधु - माधव	20 फरवरी 19	चैत्र - वैशाख
ग्रीष्म	शुक्र - शुचि	21 अप्रैल 19	ज्येष्ठ - आषाढ़
वर्षा	नभस - सभस्य	21 जून 19	श्रावण - भाद्रपद
शरद	सहस - सहस्य	23 अक्टूबर 19	मार्गशीर्ष - पौष
शिशिर	तपस - तपस्य	22 दिसम्बर 19	माघ - फाल्गुन

भारतीय नववर्ष का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। यह लोक प्रचलन है। नव संवत्सर अर्थात् वर्षारम्भ नई ऋतु और नव मास से होना चाहिए। वसंत ऋतु चैत्र माह का प्रारम्भ की तिथि और मधु मास का प्रथम शुक्ल पक्ष नव संवत्सर के प्रारम्भ की तिथि होनी चाहिए। भारतवर्ष में पंचांगीय गणनाओं के लिए सायन और निरयन नाम से दो विधाओं का वर्णन किया जाता है। सायन से सौर मास, जिनका वर्णन यजुर्वेद 13/25, 1416-15-16-17 और 15157 में मिलता है। ''मधु माधवश्च वसन्तिका वृतु....'' वेदमंत्र भारतीयों के लिए वसंत ऋतु के निर्धारण और नववर्ष के प्रारम्भ का वैज्ञानिक नियम भी है। एक संवत्सर में छः ऋतुएं होती हैं। अतः संवत्सर को ऋतुओं का पूरा लेखाजोखा मानते हैं। प्रत्येक ऋतु में दो मास होते हैं वह चाहे सौर हो या चन्द्र, आपस में संयुक्त होने चाहिए, जिसे तालिका से स्पष्ट किया गया है।

आज प्रचलित सभी निरयन पंचांगों चैत्र मास मधु मास से संबन्ध नहीं हो रहा, जो इन पंचांगों की मूल त्रुटि है। उदाहरण के लिए देखें वसंत ऋतु और मधु मास का प्रारम्भ 1 फरवरी से है। 21 मार्च तक मधु मास है। सायन वैदिक पंचांग में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 7 मार्च अर्थात् मधु मास के अन्तर्गत है। किंतु हमारे निरयन पंचांगों के अनुसार 6 अप्रैल को है, जो वसंत ऋतु के अंत में आ रही है। जब तक मधु मास समाप्त होकर मधु मास के भी 16 गते जा चुके होंगे।

कुछ लोगों का तर्क है कि चैत्र प्रतिपदा 7 मार्च के स्थान पर 6 अप्रैल को मानने से क्या फर्क पड़ता है। सारा राष्ट्र इन तिथि में मना रहा है। हम सबके साथ है। सुधी पाठक ध्यान दें।

ऋतुबद्धता हमारे पंचांगों का मुख्य सिद्धांत है। इसके विचलन से याज्ञिकों के द्वारा संकल्प पाठ अशुद्ध होंगे, वहीं ऋतु अनुकूल भोजन तथा औषधियां नहीं लेने का प्रभाव हमारे स्वास्थ्य पर पड़ेगा। नव संवत्सर से नवरात्रि अनुष्ठान प्रारम्भ होते हैं। इन अनुष्ठानों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। ऋतु परिवर्तन का प्रभाव हमारे स्वास्थ्य पर न पड़े। नई ऋतु अनुकूल भोजन से पूर्व शरीर उसके अनुकूल हो जाए। इसी के साथ नवरात्रि पर्व मनाते हैं। नवरात्रि का उद्देश्य यह है कि हमारे शरीर में जो नौ इन्द्रियों के द्वार हैं, उनमें जो अन्धकार छा गया है, उसे दूर करने के लिए प्रतिदिन एक-एक इन्द्री पर चिन्तन करना। उनमें किस प्रकार की आभा है, कैसा विज्ञान है।

रात्रि का अर्थ है अन्धकार। अंधकार से प्रकाश को पाना ही जागरण कहा जाता है। जो मानव इन नवरात्रों में जागरूक रहकर उनमें अशुद्धता नहीं आने देता, वह नौ मास (जन्म-मरण) के अंधकार में नहीं जाता। आज हम नवरात्रि पर देवियों की पूजा तो करत हैं, किंतु उसकी जो आठ भुजाएं हैं, जो अष्टांग योग की सीढ़ियां हैं, प्रकृति में आठ दिशा और शरीर आठ चक्र नौ द्वार , जिनमें देवता विराजमान हैं, उन्हें नहीं जानकर रूढ़िवादिता और अष्टांग अंधविश्वास में इस अनुष्ठान को परिणत कर दिया है। ज्ञान के मार्ग को त्यागकर भक्तिमार्ग पर चलने लगे। जबकि बिना ज्ञान के भक्ति अन्धी होती है।

ज्योतिष हमें जानना होगा। यह वेदांग है। वेद का नेत्र है। हमें यह ध्यान देना होगा कि पंचांगों में गड़बड़ कहां और क्यों है? हम न तो नवसंवत्सर का प्रारम्भ नई ऋतु से करते हैं, न ही नए मास से। चैत्र माह के 15 दिन व्यतीत हो जाने पर हमारा नववर्ष प्रारम्भ होता है। आधा चैत्र विगत वर्ष में जुड़ जाता है तथा 15 दिन बाद वैशाख माह प्रारम्भ हो जाता है। इस प्रकार वर्ष में दो चैत्र माह के साथ वर्ष में 13 मास हो जाते हैं, जो किसी भी दृष्टि से सही नहीं है। दक्षिण भारत के पंचांग माह का प्रारम्भ अमावस्या के पश्चात् शुक्ल पक्ष में करते हैं, जो अमान्त कहलाता है। जिसके प्रमाण वेद में भी मिलते हैं। जो उचित भी है। किंतु उत्तर भारत में माह का प्रारम्भ पूर्णिमा के पश्चात् कृष्ण पक्ष में करते हैं, जो पूर्णान्तक कहलाता है। इसके प्रमाण कहीं नहीं मिलते।

वेदांग ज्योतिष ग्रन्थ में छठे श्लोक में ''माघ शुक्लादि प्रपन्नस्य..... '' अर्थात् शुक्ल पक्ष में माह प्रारम्भ का विधान है।

ऋग्वेद के 10/84/19 वें मंत्र (नवो नवो भवति जायमानो .....) में स्पष्ट रूप से माह की पहली तिथि में पहले कलात्मक रूप से बढ़ते चन्द्रमा को स्वीकार किया गया है। अर्थात् माह का पहला पक्ष शुक्ल पक्ष है। चूंकि यह वेद का प्रमाण है, इस कारण शुक्ल पक्ष में माह और वर्ष प्रारम्भ हो। इसके पक्ष में और अधिक किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं रह जाती। सृष्टि आदि की पहली तिथि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा थी। इस पर सब एकमत हैं। इसीलिए वर्ष का प्रारम्भ चैत्र शुक्लपदा से मानते हैं। संकल्पना के अंतर्गत यह तथ्य तर्कसंगत दृष्टिपात होता है। जब माह का प्रारम्भ शुक्ल प्रतिपदा से होगा, तो माह के अन्त में अमावस्या आएगी। इससे वर्ष के प्रारम्भ का माह 15 दिन का नहीं, पूरे 30 दिन को होगा।

सभी पंचांगकार शुक्ल पक्ष की अन्तिम तिथि को 15 तथा कृष्ण पक्ष की अन्तिम तिथि अमावस्या को 30 लिखते हैं। जबकि दोनों ही पक्षों की प्रतिपदा से तिथियां 1 से 14 तक लिखी जाती हैं। आदित्याद्वै चन्द्रमा जायते। अर्थात् आदित्य से चन्द्रमा जन्मता है। ऐसी स्थिति कब होगी? सृष्टि के आरम्भ में जब सब ग्रह शून्य पर रहे होंगे और सूर्य के सापेक्ष चन्द्रमा की गति ने पहली तिथि बनायी होगी, तब लगा होगा कि चन्द्रमा सूर्य से उत्पन्न हो रहा है। आज भी प्रत्येक शुक्ल प्रतिपदा को यही घटना होती है। इसलिए इस अलंकारिक उपमा से यह वित्रण किया गया है कि आदित्य से चन्द्रमा जन्मता है। जो पंचांग पूर्णिमांत मास गणना अर्थात् पूर्णिमा में माह का अन्त करते हैं, वे भी अधिमासों (लोंद माह) को शुक्ल पक्ष से प्रारम्भ तथा अमावस्या को पूर्ण करते हैं। ऐसा क्यों?

मुसलमान भी माह का प्रारम्भ शुक्ल पक्ष में करते हैं। हम कृष्ण पक्ष में कहीं इसलिए तो नहीं करते, कि कहीं हम असुर तो नहीं हो गये? हम सबसे परास्त होते रहे?

अतः मैं पूरी विनम्रता से कहता हूं कि पूर्णिमांत पद्धति चन्द्रमा के लिए एक प्रकार का अपशकुन है, जिसमें माह के मध्य में चन्द्रमा समाप्त हो जाता है। वैसे भी चन्द्रमा ऋतु नहीं बनाता, वह सूर्य का अनुवर्ती है। वर्ष तथा मास दोनों ही की गणना अमान्तक अर्थात् शुक्ल पक्ष से अमावस्या तक होनी चाहिए। तभी सही समय पर नव संवत्सर माना जाएगा।

ऋग्वेद

।। ओ३म् ।।

यजुर्वेद

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ है तथा इसका मूल्य 150/- प्रति ग्रन्थ है।

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद

अथर्ववेद

सत्यार्थ प्रकाश
का एक और नवीन संस्करण प्रकाशित
साइज़ - 18 x 23 x 8
मूल्य- अजिल्द- 60
सजिल्द- 70
दानदाताओं तथा सहयोगी महानुभावों के चित्र प्रकाशन की सुविधा। जन-जन तक पहुंचाएं ऋषिवर दयानन्द का यह क्रान्तिकारी ग्रन्थ

गतांक से आगे...

कर्मफल-रहस्य

चन्द्रपाल सिंह सिरोही

योग-साधना से लेकर मुक्ति प्राप्त करने तक योगी भी हजारों-लाखों जीवात्माओं का कर्जदार हो जाता है। योगी को भी अन्न, फल, दूध, कपड़े, रहने को स्थान आदि दैनिक उपयोग की वस्तुएं चाहिए। उन वस्तुओं के बनाने में लाखों जीवों के कर्म शामिल हैं। यह अलग बात है कि योगी योग-क्रियाओं द्वारा भोगों को दग्धबीज कर देता है। परन्तु दूसरी सृष्टि में वही दग्धबीज भोग भोगने को योगी को जन्म-मृत्यु के बन्धन में आना पड़ेगा। इसलिए यह कहना कि हम अपने ही कर्मों का भोग भोगते हैं, ठीक नहीं है। अन्य जीवों के कर्मो के फल का भोग हम और हमारे कर्मों के फल का भोग अन्य जीव भी करते हैं। इसी आदान-प्रदान से सृष्टि चलती है।

स्वमन्तव्य

''सतमूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगा'' परमपिता जीवात्मा को अच्छे-बुरे कर्मों का फल जाति, आयु और भोग के रूप में देता है।

1. जाति (योनि)- मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि।
2. आयु- (समय) (काल)।
3. भोग- अच्छे-बुरे कर्मों का फल सुख-दुख।

जाति (योनि) और भोग पर विद्वानों में मतभेद नहीं है। आयु पर मतभेद है। कुछ आयु को निश्चित, कुछ घटना-बढ़ना मानते हैं। आयु (समय) के बारे में हम लेख में ऊपर बता चुके हैं कि समय दो प्रकार का होता है- एक मानुषी (ज्ञानगम्य); दूसरा ईश्वरीय (अनन्त), जो जगत की उत्पत्ति, स्थिति, और नाश का कारण है।

परमपिता परमात्मा ने जीव को मनुष्य योनि दी भोग भोगने के लिए। समय के बिना कोई भोग नहीं भोगा जा सकता। उसके लिए परमात्मा ने समय (आयु) दिया है।

विचारणीय विषय यह है कि जीव को जाति (योनि) भोग भोगने के लिए मिली है या जाति के लिए भोग मिले हैं?(समय उभय पक्ष है) उत्तर स्पष्ट है कि जीव ने कर्म किये। कर्म का फल भोग हुआ। उन भोगों को भोगने के लिए जाति (योनि) मिली, अर्थात् भोग मुख्य और जाति गौण है। क्योंकि कर्म नहीं, तो भोग नहीं; और भोग नहीं, तो जाति (योनि) नहीं। अब प्रश्न उठता है कि आयु भोग की हुई या जाति की। जब भोग के लिए जाति है, तो आयु भी भोग की ही हुई, न कि जाति की। भोग भोगने को ही परमात्मा समय देता है। कितने भोग, किस योनि (जाति) में भोगने हैं, परमात्मा निर्धारित करता है। मगर समय अनन्त है। उसकी कोई सीमा नहीं है। यह जीवात्मा के ऊपर निर्भर है कि वह भोगों को किस प्रकार भोगता है। मनुष्य योनि पर ही विचार करते हैं।

अच्छे-बुरे दोनों कर्म करने पर आयु बढ़ती है- यदि जीवात्मा योगसाधना, शुभकर्म, आयुर्वेद के नियमों का पालन करते हुए संयमी जीवन जीता है, तो वर्तमान (मानुषी) आयु भी बढ़ती है, तथा अच्छे कर्म करने से अच्छे भोग भी बढ़ते हैं। बढ़े हुए भोगों को भोगने के लिए परमात्मा आयु (समय) देता है। इसलिए भोगों की आयु बढ़ गयी। यही अच्छे कर्मों से आयु का बढ़ना है। यदि जीव बुरे कर्म करता है। शराब, भांग, अण्डा, मांस, अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करता है, बुरी संगत, विषयों में फंसता है, तो वर्तमान (मानुषी) आयु घटती है। वह जल्दी मृत्यु को प्राप्त होता है। परन्तु बुरे कर्म करने से निम्न योनियों में जाने के योग बढ़ जाते हैं। उन्हें भोगने को भी परमात्मा समय (आयु) देता है। अर्थात् बुरे कर्म करने पर भी आयु बढ़ती है। भोगों के भोगने में मानुषी कालगणना का महत्व नहीं है। वहां परमात्मा का अनन्त काल है, जो पूरे ब्रह्माण्ड में समान है। यदि मानुषी काल से आयु की गणना करेंगे, तो परमात्मा की सारी न्याय-व्यवस्था चौपट हो जाएगी। क्योंकि अन्य ग्रहों में दिन-रात, माह, वर्षों का मानुषी समय भिन्न है। जीवात्मा भोगों को जल्दी भोगे या देर से भोगे, कोई पाबन्दी नहीं है। उन भोगों को भोगने में जन्म-मृत्यु बन्धन नहीं है। जन्म-मृत्यु दुख नहीं है। सृष्टि की स्वाभाविक क्रिया है। ''अपरस्मिन्न परं....... (वैशेषिक दर्शन- 316)

उदाहरणस्वरूप जीव को मुर्गे की जाति (योनि) में भोग भोगने हैं। परमात्मा उसे मुर्गे की योनि देगा। मगर अन्य जीवों के पापकर्म के कारण अण्डे में आते ही मनुष्य, कुत्ते, बिल्ली या अन्य जीवों द्वारा अण्डा खा लिया गया या नष्ट कर दिया गया। दोबारा आया, तो चूजा खा लिया गया। तिवारा में 1, 2 माह का काटकर खा लिया गया। बार-बार आया, बार-बार नष्ट कर दिया गया। यहां पर भोग निश्चित है कि इतने भोग मुर्गे की योनि में भोगने हैं। समय (आयु) निश्चित नहीं है। कोई व्यवधान न आये, तो एक जन्म में भी भोग सकता है। अन्य जीव मारते रहे, तो दस जन्म भी लग सकते हैं। यहां मुर्गे की योनि के भोग निश्चित हैं, जाति (योनि) की आयु निश्चित नहीं है। परमात्मा की न्याय व्यवस्थानुसार जीवात्मा बीच-बीच में अन्य योनियों में भी जा सकता है।

आयु, भोग भोगने से ही घटती है अर्थात् जितना भोग भोगने में समय लगेगा, उतना समय (आयु) हमारे भोगों का घट गया। मेरा विद्वानों से नम्र निवेदन है कि परमात्मा के अनन्त काल को मानुषी काल में न जोड़ें। परमात्मा की व्यवस्था भारत के लिए नहीं है, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए है। जो नियम सारे संसार पर लागू हो, वही सही है। महर्षि पतंजलि ने तो सृष्टि निर्माण के 6 कारणों में से एक कारण 'विद्या-ज्ञान' की व्याख्या की है। हम योगदर्शन के केवल एक सूत्र पर झगड़ रहे हैं, जो उचित नहीं है। हमारे पास वेदों के रूप में ज्ञान का अक्षय भण्डार है।

नोट : मैं कोई सिद्धहस्त लेखक नहीं हूँ। मेरे लेख में बहुत-सी गलतियां होंगी। विद्वानों से करबद्ध निवेदन है कि क्षमा करते हुए अपने विचारों से अवगत करायें। इत्योम शम्।

धन्यवाद!

ऋषिचरणों का अनुचर
चन्द्रपाल सिंह सिरोही

आर्यपुरुष बाबू राम किशोर गुप्ता

कृष्णमोहन गोयल

1950 के दशक में नजीबाबाद आर्य समाज के अध्यक्ष ला0 ज्योति प्रसाद ने अपनी पुत्री का विवाह किरतपुर (बिजनौर) के एक संभ्रान्त परिवार में समग्र वैदिक रीतियों से सम्पन्न कराया। किरतपुर के संभ्रान्त परिवार के राजकुमार धर्मवीर जी का तीन-चार साल तक वैवाहिक जीवन सुगमता से चलता रहा। अचानक ही धर्मवीर जी का मेलजोल कुछ मिशनरियों से ज्यादा बढ़ गया और मिशनरियों की प्रवृत्ति के अनुसार धर्मवीर जी धर्म परिवर्तन कर दूसरा विवाह करने पर अडिग हो गये। ला0 ज्योतिप्रसाद जी ने इस विवाह का विरोध किया। धर्मवीर जी किरतपुर से भागकर उत्तरी भारत के सबसे प्रमुख चर्च कश्मीरी गेट दिल्ली में आ गये।

ला0 ज्योतिप्रसाद जी ने इस संबन्ध में झालू निवासी बाबू रामकिशोर से संपर्क कर सहयोग की कामना की। बाबू रामकिशोर जी डीएवी कालेज कानपुर से स्नातक तक शिक्षा ग्रहण कर चुके थे और आर्य समाज के साथ-साथ आरएसएस के सहयोग से भी प्रभावित थे। वह भारत सरकार के सूचना प्रसारण मंत्रालय में क्लर्क नियुक्त थे। बाबू रामकिशोर जी ने ला0 ज्योतिसाद से कहा कि यह चर्च उत्तरी भारत का सबसे प्रमुख चर्च है और इस चर्च की ख्याति सम्पूर्ण उत्तरी भारत में कुटिल कार्यो के लिए प्रख्यात है।

बाबू रामकिशोर जी युवा तो थे ही, साथ ही आरएसएस का गणवेश पहनना उनकी दैनिक क्रिया थी। लाल किले में आरएसएस की शाखाओं में वह सक्रिय रहते थे। दरियागंज में स्थित आर्य समाज के कार्यक्रमों में भी वह परिवार सहित भागीदारी करते थे।

शीत ऋतु की प्रथम वेला में बाबू रामकिशोर जी साइकिल से कश्मीरी गेट स्थित चर्च के बाहर परिसर में गये। चर्च में एक माली (चौकीदार) फुलवारी में कार्य कर रहा था। चौकीदार से वार्तालाप करने पर पता चला कि वह चांदपुर (बिजनौर) का निवासी है और उसको भी धर्मपरिवर्तन कर मसीह बना दिया गया है। उस चौकीदार ने कहा कि इस चर्च में रोजाना अनेक युवक आते हैं और उनका धर्म परिवर्तन करा दिया जाता है। आप कल सुबह आठ बजे यहां आयें तो मुख्य पादरी से आपकी भेंट संभव है।

बाबू रामकिशोर जी अगले दिन प्रात: आठ बजे चर्च कम्पाउण्ड में आये, और मुख्य पादरी से भेंट करने का प्रस्ताव किया। पादरी ने अंग्रेजी में बाबू रामकिशोर जी से लगभग दो घण्टे तक बाइबिल पर चर्चा की और कहा कि ईसाई धर्म में कुटिल व्यवस्था नहीं है। बाबू रामकिशोर जी ने अपने कोट से गीता और सत्यार्थप्रकाश की दो पुस्तकें पादरी साहब को देते हुए कहा कि गीता विश्व का सबसे पुराना धार्मिक ग्रन्थ है और विश्व की समस्त भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। इसी प्रकार सत्यार्थप्रकाश भारत के प्रत्येक हिन्दू परिवार में पढ़ा जाता है। आप संदिग्ध व्यक्ति धर्मवीर जी को किरतपुर पहुंचाने का प्रयास करें अन्यथा आपके चर्च की तलाशी देहली पुलिस करने पर मजबूर होगी, क्योंकि देहली प्रदेश के गृहसचिव धर्मवीर जी बिजनौर के रहने वाले हैं।

बाबू रामकिशोर जी की इस चेतावनी पर उत्तरी भारत के सबसे प्रमुख पादरी एकदम घबरा गये और बाबू रामकिशोर जी को आश्वस्त किया कि अगले 24 घण्टों में वह संदिग्ध धर्मवीर किरतपुर सकुशल वापस पहुंच जाएगा।

ऐसे कर्मयोगी होते थे आर्य सपूत।

-कोट, अमरोहा
फोन : ९९२७०६४१०४

आइए, प्रयाग (प्र+याग) की हवन भूमि पर यज्ञ करें

यह सर्वविदित है कि प्रयाग का कुम्भ व माघ मेला प्रसिद्ध है, और इस मेले में वैदिक धर्म की विभिन्न शाखाओं के साधु-संत अपने-अपने दार्शनिक विचारों/ मतों के प्रचार के लिए माहपर्यन्त आते हैं। इस वर्ष कुम्भ मेला दिनांक 15.01.2019 से 19.02.2019 तक चलेगा।

महर्षि दयानन्द जी ने हरिद्वार के कुम्भ मेले में स्वयं देखा था कि किस प्रकार से भोली-भाली जनता को धर्म के नाम पर ठगा जाता है। धर्म के नाम पर ठगविद्या को देखकर इस प्रकार के मेलों से महर्षि दयानन्द जी के मन में घृणा उत्पन्न हो गयी थी, और इसी कारण आर्य समाज इन मेलों को पाखण्ड मानते हुए सामान्य तौर पर दूर रहता है। हालांकि महर्षि जी के कालखण्ड की विडम्बनाओं के स्वरूप में वर्तमान समय में काफी परिवर्तन हो गया है, और ठगविद्या पर भी लगाम लगी है। जनमानस में जागरूकता तो बढ़ी है, किंतु आध्यात्मिक भूख के कारण 'किम् कर्तव्य मूर्खता' रूपी विडम्बना भी बनी हुई है। इसका सबसे बड़ा कारण वैदिक धर्म की विभिन्न शाखाओं की विरोधाभाषी विचारधाराओं का बना रहना है।

पिछले कई दशकों से हम आर्य समाजी भी समुचित तरीके से आम जनमानस को वैदिक धर्म के मूल तत्वों से अवगत कराने में असफल रहे हैं, और कहावत भी प्रचलित हो गयी कि दूसरों को जगाते-जगाते स्वयं सो गये आर्य समाजी।

पिछले कई दशकों से आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रयाग अपने सहयोगी आर्य समाजों के सहयोग से यथासंभव जनजागरण करती आ रही है। इस बार और भी अच्छा कार्य करने की उम्मीद है। हम सभी आर्य समाजी विद्वानों, प्रचारकों, संतों को कुम्भ मेले के सदुपयोग हेतु सादर आमंत्रित करते हैं।

दानदाताओं से भी विनम्र अनुरोध है कि सात्विक दान देकर वैदिक धर्म के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु हमें सहयोग करें। जो संस्थाएं वैदिक धर्म/ आर्य समाज से संबन्धित प्रचार पत्रों/ पुस्तिका/ ट्रैक्ट नि:शुल्क वितरण करना चाहती हैं, उनका भी स्वागत है। हमारा बैंकखाता (बचत) संख्या-24440100037154, बैंक ऑफ बड़ौदा, बांसमण्डी, प्रयागराज है, जिसका RTGSINEFT, IFSC कोड BARBOALBANS है।

निवेदक-
अजेय कुमार महरोत्रा, मंत्री
जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, इलाहाबाद

उत्तर भारत का लोकप्रिय पाक्षिक समाचार-पत्र

आर्यावर्त केसरी

पाठक संख्या – 50000

विज्ञापन एवं आलेख प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें-

सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
फोन : 05922-262033, 09412139333
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

योग भगाए रोग रीढ़ की समस्याओं से दूर रखता है

ताड़ासन

विधि :–

1. सबसे पहले अपने पैरों की मद्द से सीधे खड़े हों।

2. अपने दोनों पैरों के बीच थोड़ा सा जगह बनायें।

3. उसके बाद एक लम्बी साँस के साथ अपने पैरों की उँगलियों की मद्द से शरीर को थोड़ा ऊपर उठायें और अपने दोनों हांथो को धीरे-धीरे उपर उठायें। उसके बाद अपने एक हाँथ की उँगलियों से दूसरी हाँथ के उँगलियों को जोड़ें।

4. कम से कम १५-३० सैकेंड इस मुद्रा में रहें और अपने शरीर को ऊपर की और खीचें।

5. उसके बाद धीरे-धीरे अपने हांथों को सामान्य स्तिथि में ले आयें।

लाभ :–

1. यह आसन उन लोगों के लिए ज्यादा फायदेमंद साबित होता है जो अपना लम्बाई बढ़ाना चाहते हैं।

2. मुद्रा में सुधार होता है।

3. रीढ़ की समस्याओं से दूर रखता है।

आओ योग करें

इस स्तंभ के अन्तर्गत योग-ऋषि स्वामी रामदेव जी द्वारा प्रस्तुत योग संबन्धी सामग्री नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही है। आशा है कि इस स्तम्भ से पाठकगण लाभान्वित होंगे और योग को अपनी जीवनशैली बनाकर 'योग युक्त विश्व- रोग मुक्त विश्व' की ओर उद्यत होंगे। -सम्पादक

हमारे जीवन में योगासन तथा प्राणायाम का विशेष महत्व है। हमें नियमित रूप से इनका अभ्यास करना चाहिए। इससे शरीर निरोगी रहता है तथा व्यक्ति दीर्घायुष्य को प्राप्त करता है। प्रात:काल की बेला में हम नियमित रूप से योगाभ्यास तथा प्राणायाम करने का संकल्प लें।

– संपादक

आध्यात्मिक चिन्तन एवं वेदानुशीलन पर आधारित स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु' द्वारा लिखित पुस्तक

आयुष्मान् भव

(दीर्घ अर्थात् लम्बी आयु प्राप्त करो)
१२० पृष्ठ, रंगीन आवरण
: पुस्तक प्राप्ति स्थल :
स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु'
आर्यसमाज मन्दिर, बिहारीपुर
बरेली (उ0प्र0)– 243003
चल0 : 09412372 1179, 9759527485
मूल्य : 25 रुपये

आज ही मंगाएं यह संग्रहणीय पुस्तक

सत्यार्थप्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

आर्यावर्त केसरी सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार योजना

सत्यार्थप्रकाश के मर्म को समझने-समझाने का दायित्व विद्वानों का है। हमारा प्रयास सत्यार्थप्रकाश के विद्वान तैयार करना है, जो महर्षि दयानन्द के सधर्म रथ को आगे बढ़ा सकें। इसी उद्देश्य से आर्यावर्त केसरी पाक्षिक के सानिध्य में श्री सुमन कुमार वैदिक के संयोजन में सत्यार्थप्रकाश परीक्षा आयोजित की जा रही है।

परीक्षा में बैठने के लिए आर्यावर्त केसरी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा के पते पर अपना नाम, पता, फोटो, परिचय की छायाप्रति के साथ 150/- रुपये की धनराशि देनी होगी, जिसमें प्रतिभागी को एक सत्यार्थप्रकाश दिया जाएगा या छ: माह की आर्यावर्त केसरी पाक्षिक की सदस्यता दी जाएगी। यदि आप अपना रजिस्ट्रेशन डाक द्वारा कराएंगे, तो उस स्थिति में आर्यावर्त केसरी के भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या-30404724002 (IFSC कोड SBIN 0000610) में 200/- रुपये जमा कराने होंगे तथा रसीद की छायाप्रति भेजनी होगी। पंजीकरण दिनांक- 01 अक्टूबर 2018 से प्रारम्भ हो चुके हैं। पंजीकरण आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के कार्यालय में अथवा ग्रेटर नोएडा स्थित श्री सुमन कुमार वैदिक के निवास पर कराये जा सकते हैं।

प्रथम पुरस्कार- एक लाख रुपये तथा स्मृति चिह्न
द्वितीय पुरस्कार- पचास हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न
तृतीय पुरस्कार- पच्चीस हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न
अनेक नामित पुरस्कार- इसकी संख्या निश्चित नहीं है क्योंकि ये श्रद्धालुओं के परिजनों के नाम से दिये जाएंगे।
पच्चीस पुरस्कार- एक-एक हजार रुपये।

-: कैसे बनेंगे विजेता :-

(1) परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, जिनका उत्तर उत्तरपुस्तिका में लिखना होगा।
(2) किसी भी आयुवर्ग का व्यक्ति परीक्षा दे सकता है।
(3) आर्यावर्त केसरी के 25 सदस्य एक स्थान पर बनाने वाले का पंजीकरण नि:शुल्क होगा एवं आर्यावर्त केसरी की ओर से उसको फोटोयुक्त प्रेस परिचय पत्र दिया जाएगा।
(4) पत्र-व्यवहार में सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा लिफाफे पर अवश्य लिखें। परीक्षा का आयोजन दिनांक- 07 जुलाई 2019 को इन प्रस्तावित केन्द्रों- दिल्ली, अमरोहा, ग्रेटर नोएडा, लखनऊ, नजीबाबाद, बरनावा, सासनी, मेरठ, बनारस, बरेली, गुरुग्राम, महेन्द्रगढ़, झज्जर, हिसार, रोहतक, मुम्बई, बेंगलूरु, कलकत्ता, चेन्नई, होशंगाबाद, हैदराबाद, बोकारो, भोपाल, चण्डीगढ़, रोजड़, कोटा, हरिद्वार, उदयपुर, अहमदाबाद आदि में सम्पन्न होगी। परीक्षा केन्द्रों की संख्या बढ़ाने अथवा घटाने तथा परीक्षा तिथि में परिवर्तन करने का अधिकार संयोजक मण्डल को होगा।

विशेष :

1- जो भी परीक्षार्थी विजेता घोषित होगा, उसको पुरस्कार प्राप्त करने से पूर्व मंच पर अपनी योग्यता भी सिद्ध करनी होगी। पुरस्कार-मंच पर उससे जनसामान्य के द्वारा सत्यार्थप्रकाश से संबन्धित प्रश्न पूछे जाएंगे।
2- अपने प्रियजनों की स्मृति में उनके नाम से।
3- सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा की निधि हेतु मुक्तहस्त से दान दें, रजिस्ट्रेशन कराने में अक्षम प्रतिभागियों को शुल्क में मद्द दें।
4- आयोजन में हमसे जुड़कर सहयोग करें, तथा अपने शहर में परीक्षा का केन्द्र बनवाएं। धन्यवाद,

सुमन कुमार वैदिक- मुख्य संयोजक
निवास- जे.380, बीटा-II,
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) मो. 8368508395

डॉ० अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
मो. 9412139333

डॉ० अनिल रायपुरिया- संयोजक
नि. कोट बाजार, अमरोहा
मोबा. : 9837442777

देश-विदेश में प्रसारित होने वाले

आर्यावर्त केसरी

में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

आर्यावर्त केसरी वर्तमान में देशभर के कोने-कोने के साथ ही विश्व के अनेक देशों में प्रसारित हो रहा है। विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे अपने व्यक्तिगत विज्ञापन, शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित कराकर लाभ उठायें।

विज्ञापन दर इस प्रकार है-
पूरा पृष्ठ रंगीन, एक अंक का शुल्क- 12000/- रुपये
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/2 पृष्ठ का शुल्क- 6500/-
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/4 पृष्ठ का शुल्क- 3500/-
स्थाई अथवा एक बार से अधिक प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों पर विशेष छूट देय है। **-प्रबन्धक (विज्ञापन), मोबा. : 8630822099**

अवश्य पढ़ें- आज ही मंगाएं

आर्य समाज की विचारधारा, वैदिक चिन्तन, तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों को जानने के लिए पढ़िए

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित तथा आचार्य क्षितीश वेदालंकार द्वारा लिखित लघु पुस्तिका

आर्य समाज की विचारधारा

प्रत्येक परिवार, आर्य समाज तथा विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिए यह लघु पुस्तिका। उत्सवों, साप्ताहिक सत्संगों, धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठानों तथा शोभायात्रा आदि में सैकड़ों की संख्या में बांटें यह पुस्तिका, और जन-जन तक पहुंचाएं आर्य समाज व ऋषि दयानन्द सरस्वती की वैदिक विचारधारा।

न्यूनतम ५०० पुस्तकें लेने पर वितरक में नाम व पता प्रकाशन की सुविधा, तथा मूल्य में भी विशेष छूट।

हमारा पता है- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (**उ.प्र.**), **मो० : 09412139333**

श्री, समृद्धि, यश, वैभव, सुस्वास्थ्य
व दीर्घायुष्य की दें

मंगलकामनाएं

जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, अथवा किसी विशेष उपलब्धि जैसे पावन अवसरों पर अपने परिजनों, मित्रों व शुभचिन्तकों को बधाई व शुभकामनाएं देना न भूलें।

आओ आर्यावर्त केसरी के माध्यम से ऐसे बधाई संदेश व शुभकामनाएं प्रकाशित कराएं...

और प्रदान करें

आर्यावर्त केसरी के प्रचार-प्रसार यज्ञ में 501/- की सहयोग रूपी पावन आहुति।

-सम्पादक (मोबा. : 9412139333)

आर्यावर्त केसरी के सदस्यों से विनम्र अनुरोध

आर्यावर्त केसरी के सभी सम्मानित सदस्यों से अनुरोध है कि उनकी वार्षिक सदस्यता अवधि नाम व पते की स्लिप पर अंकित रहती है। अतः स्लिप पर अंकित अवधि के अनुसार यथासमय अपना वार्षिक सदस्यता सहयोग भेजते रहा करें। जिन मान्य सदस्यों ने अभी तक अपनी वार्षिक सदस्यता–राशि जमा नहीं की है, वे कृपया मनीआर्डर द्वारा आर्यावर्त केसरी के पते पर भेजकर रसीद प्राप्त कर लें, ताकि उन्हें आर्यावर्त केसरी निरंतर मिलता रहे।

प्रबन्धक (प्रसार)–
आर्यावर्त केसरी

अब आप आर्यावर्त केसरी के नियमित स्तम्भों में निरन्तर पढ़ते रहेंगे महत्वपूर्ण सामग्री

इन स्तम्भों के लिए सचित्र सामग्री प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं

ये हैं आर्यावर्त केसरी के कुछ महत्वपूर्ण स्तम्भ

♦ ऐसे होते हैं आर्य, ♦ भारतवर्षीय गौशालाएं, ♦ प्रकाशित आर्ष साहित्य- पुस्तकों की समीक्षा, ♦ आर्य जगत की महान विभूतियां ♦ आर्य जगत के लोकोपयोगी न्यास (ट्रस्ट), ♦ आर्य जगत के गुरुकुल, ♦ आर्य जगत के प्रकाशक और प्रकाशन, ♦ आर्य जगत की ऐतिहासिक धरोहर, ♦ आर्य जगत के क्रांतिवीर- अमर सेनानी- शहीद, ♦ आर्य जगत के मूर्धन्य प्रवक्ता व तपस्वी सन्यासी वृन्द, ♦ आर्य जगत के भजनोपदेशक, ♦ आर्य जगत द्वारा संचालित प्रकल्प, ♦ आर्य जगत की शिक्षण संस्थाएं और काव्यजगत, योग भगाये रोग, खानपान और स्वास्थ्य जैसे अन्य कई नियमित कॉलम।

कृपया उपर्युक्त स्थाई कॉलमों (स्तम्भों) के लिए सचित्र सामग्री भेजें प्रकाशनार्थ। साथ ही, अपने प्रियजनों को दें जन्म दिवस आदि की हार्दिक शुभकामनाएं तथा दिवंगत दिव्यात्मनों का करें भावपूर्ण स्मरण।

आर्यावर्त केसरी के इस अत्यन्त व्यय साध्य, समय साध्य व श्रम साध्य प्रकाशन यज्ञ में आपकी तन-मन-धन से सहयोग रूपी पावन आहुति भी सादर निवेदित हैं। मंगलकामनाओं सहित,

- डॉ० अशोक कुमार आर्य,
सम्पादक (9412139333)

॥ ओ३म् ॥

ओ३म्　　ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाओ)

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित 'आर्यावर्त केसरी' के बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC कोड : SBIN0000610) में जमा करा सकते हैं, अथवा चैक या धनादेश द्वारा भेज सकते हैं। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर. -05922-262033, चल.- 09412139333

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-

आर्यावर्त केसरी

मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawartkesari@gmail.com

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', (मोबा : 9456274350)
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार, डॉ. ब्रजेश चौहान, अमित कुमार
मुद्रण- इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य